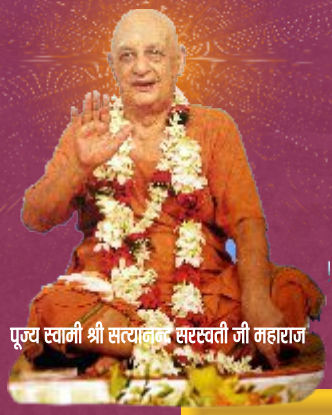

पूज्य स्वामी श्री सत्यानन्द सरस्वती जी महाराज

साकेत संदेश

2026

22 वां पाटोत्सव विशेषांक

पूज्य स्वामी श्री अभयानन्द सरस्वती जी महाराज

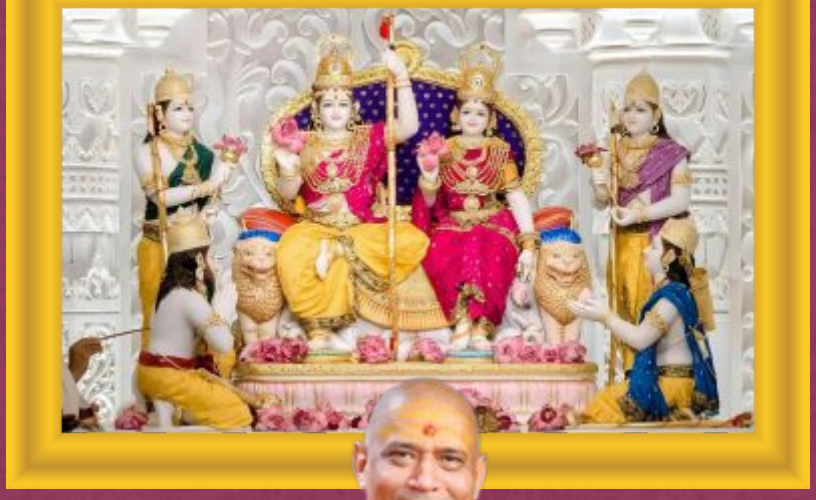

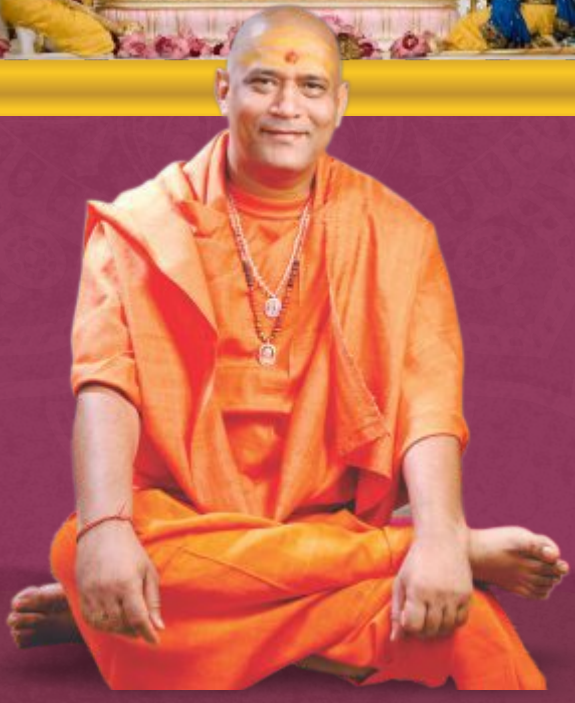

साकेतधाम, गौरीघाट, जबलपुर

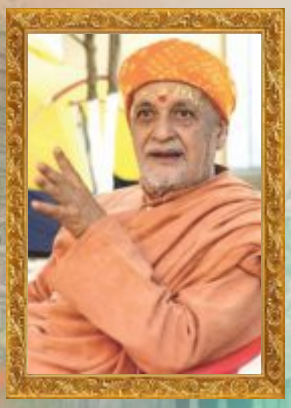
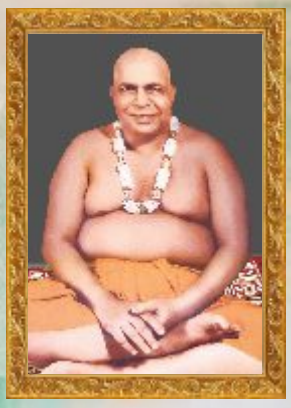
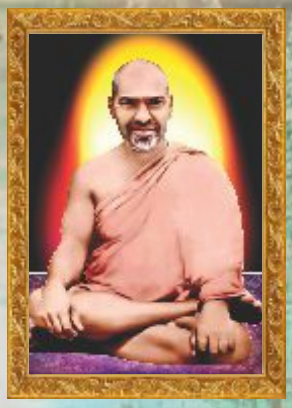

।। श्री सद्गुरु देवाय नमः ।।

अनन्त श्री विभूषित परमहंस स्वामी अखण्डानंद जी महाराज

गुरु-वंदना

गुरु बिन ज्ञान न कोई पावे। बिना ज्ञान वैराग्य न आवे।।
ताते सद्गुरु पद्मपरागा। वन्दउँ प्रथम, सहित अनुरागा।।
गुणागार गुरु ज्ञान प्रकाशा। दे सतसंगति रखहु सकाशा।।
कर यथार्थ गीतामृत पाना। जिय निज मानसगुरु पहचाना।।
ज्ञानप्रकाश किरण गुरु दीजै। चित ब्रह्म में स्थित कीजै।।
ब्रह्म ज्ञान में चित अनुरागे। निर्गुण पंथ मोहिं प्रिय लागे।।
जेहिं गुरु कृपादृष्टि मिल जाये। मोह निशा से सो जगजाये।।
स्वामी अखण्ड नाम अनूपा। हे गुरुदेवा ब्रह्म स्वरूपा।।
ब्रह्म ध्यानमय सद्गुरु स्वामी। कृपा सिन्धु हे अन्तर्यामी।।
तुम बिन यह भवसिंधु आगाधा। पर न पाऊँ उपजै बाधा।।
गुरुवर चरण शरण में लीजै। भव से मुक्ति मंत्र मोहि दीजै।।

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्
मन्त्रतूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा

साकेत संदेश

षष्ठमांक

मंगलाचरण

।। श्री गणेशाय नमः ।।

मंगलम् भगवान विष्णु, मंगलम् गरुड़ध्वजा।
मंगलम् पुंडरीकाक्ष, मंगलाय तनो हरी।।

— हरि ॐ तत्सत् —

श्री रामेश्वरम् महादेव, साकेत धाम, 22वाँ पाटोत्सव के शुभ अवसर पर प्रकाशित तथा भक्तगणों के मध्य सीमित वितरण हेतु।

संकलनकर्ता

सुनील कुमार चौरसिया

प्रकाशक, प्रिन्टर्स एवं भेंटकर्ता

श्री नीरज अग्रवाल

नीरज ऑफसेट, जबलपुर (मो. 9425151400)

पुरोवाक्

बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।
अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू।।

गोस्वामी तुलसीदास जी की उक्त चौपाई को हृदय में धारण करते हुए हम सभी मुमुक्षुजन प्रात: वंदनीय पूज्यपाद स्वामी गिरीशानंद जी महाराज के श्री चरणों में बारंबार प्रणाम अर्पित करते हैं।

हमारा मानना है कि व्यक्ति अपने श्रद्धा तथा विश्वास की पूँजी के अनुसार ही पात्रता ग्रहण कर पाता है; अपने आराध्य के निकट पहुँच पाता है। पूर्ण समर्थ गुरु ही वह महत्वपूर्ण कड़ी है, जो साधक के मन में अगाध श्रद्धा तथा विश्वास जगा सकता है। श्रद्धा तथा विश्वास के इसी पतवार से हम भवसागर पार उतरने हेतु प्रयासरत हैं और यह पतवार हम प्रात: वंदनीय पूज्यपाद स्वामी गिरीशानंद जी महाराज कर-कमलों में सौंप चुके हैं, जो हम सभी का हर विधि से कुशलक्षेम वहन कर रहे हैं।

भूल-चूक होना मानवीय स्वभाव है और उसे नजरअंदाज करना ईश्वरीय अनुदान है। आशा है कि हमारे प्रयास में कहीं कोई त्रुटि हो, तो उस पर ध्यान न देते हुए आप सब पत्रिका के प्रस्तुत अंक का स्वाध्याय करते हुए पुण्य के भागी बनेंगे, ऐसी आप सभी से हमारी विनम्र प्रार्थना है।

इस अंक को आकर्षक तथा संग्रहणीय बनाने के लिए पत्रिका के अधिकांश फोटोग्राफ गुरूजी के विगत वर्ष के पाटोत्सव तथा अन्य प्रमुख अवसरों से संकलित किए गए हैं।

पत्रिका-प्रकाशन में हम पूज्यपाद स्वामी गिरीशानंद जी महाराज के बहुमूल्य सुझाव एवं मार्गदर्शन के लिए अत्यंत आभारी एवं श्रद्धानवत हैं। पत्रिका में फोटो के लिए श्री नलिन पांडे, फोटोग्राफर, टाइपिंग के लिए श्री विश्वकर्मा जी एवं डिजाइनिंग के लिए राधे वोहरा जी का सादर आभार, पूज्य गुरुदेव के शिष्य पारिकर से श्री नीरज अग्रवाल, संचालक, नीरज ऑफसेट के हम सभी अत्यंत आभारी हैं, जिन्होंने पत्रिका को सुंदर रूप में प्रिंटिंग एवं प्रकाशन कर सभी भक्तों को वितरण हेतु सुलभ कराया।

निवेदक

स्थान: साकेत धाम, जबलपुर

सुनील कुमार चौरसिया
पाटोत्सव महापर्व: 2026
sunilchourasia@hotmail.com

GURUJI's
Upcoming Programme Schedule
Upto May 2026

पूज्य स्वामी गिरीशनन्द जी महाराज, आगामी कार्यक्रम सूची

मार्च 2026

1–6 मार्च – होली महोत्सव, वृंदावन
3 मार्च – फूलों वाली होली, राधा गोविंद मंदिर, जैत, वृंदावन (श्री पुनीत भाटिया)
10–14 मार्च – प्रवचन, जबलपुर (श्री संजय अग्रवाल एवं परिवार)
19–27 मार्च – प्रवचन, बिरला मंदिर, दिल्ली (श्रीमती राजश्री बिरला)
27 मार्च – रामनवमी, दिल्ली

अप्रैल 2026

1 अप्रैल – हनुमान जयंती, सूरत (श्रीमती मन्जू राजेश केडिया)
18–20 अप्रैल – अक्षय तृतीया, राधा गोविंद मंदिर (श्री पुनीत भाटिया)
25 अप्रैल – जानकी नवमी (श्रीमती पूनम अशोक टेकड़ीवाल) सूरत

मई 2026

6–10 मई – प्रवचन, आर.के. मिशन, उत्तरकाशी के निकट
(स्वमी शांतात्मानन्द जी)

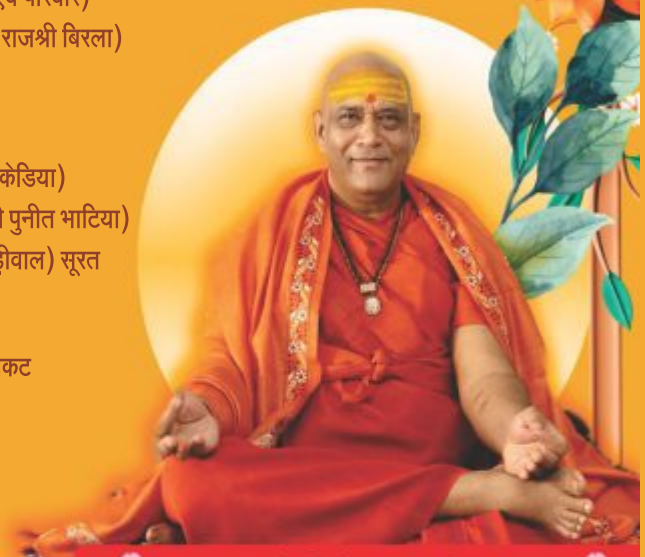

पूज्य स्वामी गिरीशनन्द जी महाराज

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ क्रं
1.	गीता में सबके कल्याण की बात है	5
2.	गुरु तत्व	8
3.	पूज्य स्वामी गिरीशानंद की जीवन यात्रा के प्रश्नोत्तर	10
4.	पूरुषार्थ चतुष्टय	28
5.	गुरु की खोज	31
6.	जीवन में समय का सदुपयोग	35

गुरुदेव पू. सन्तों की मध्य

गीता में सबके कल्याण की बात है।

चिंतन - पू. स्वामी अखण्डानंद जी महाराज

गीता भगवान् की वाणी है। जैसे पिता की वाणी अपने सभी पुत्रों के लिए हितकारी होती है वैसे ही गीता की वाणी भी संसार के सभी प्राणियों के लिए हितकारी है। आप देखेंगे–भगवान् केवल बुद्धिमानों का ही कल्याण नहीं करना चाहते, श्रद्धावानों का भी कल्याण करना चाहते हैं।

गीता के सोलहवें अध्याय में दैवी–सम्पदा का वर्णन है– दैवी–सम्पदा माने श्रेष्ठ–सद्गुण यदि हमारे जीवन में श्रेष्ठ–श्रेष्ठ गुण आ जायें तो हम मोक्ष के मार्ग में बढ़ जायें। भगवान् देखो यह बात कहते हैं:–

दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।

आपके जीवन में यदि श्रेष्ठ गुण आवेंगे, तो आपको मुक्ति मिलेगी और यदि आप दुर्गुण धारण करेंगे, आसुरी सम्पत्ति धारण करेंगे तो बन्धन में फँसेगे! सत्वगुण के उत्कर्ष से दैवी–सम्पदा होती हैं, तमोगुण के उत्कर्ष से आसुरी सम्पदा होती है और दोनों के मिश्रण से रजोगुणी–सम्पदा होती है।

दम्भ करना–बनावट करना, क्रोध रुक्षता, पारुष्य–कठोरता–यह भी आसुरी सम्पदा का ही लक्षण है कि जिससे बोले उससे टेढ़ा ही बनकर बोले, जिससे बात करें उससे रूखा होकर बात करें–यह रुक्षता भी आसुरी सम्पत्ति है।

आपको मैं कह रहा था कि सोलहवें अध्याय में भगवान् कहते हैं कि सद्गुणों के द्वारा तुम श्रेष्ठ बनो। इसमें भगवत्–प्राप्ति की कोई बात नहीं है! सत्रहवें अध्याय में कहते हैं कि श्रद्धा के द्वारा श्रेष्ठ बनो।

आपके ध्यान में सत्रहवाँ अध्याय होगा–सात्विक पुरुष का, राजस पुरुष का, तामसी पुरुष का भोजन कैसा होता है– खाना भी सिखाते हें, यज्ञ कैसा होता है, तप कैसा होता है, दान कैसा होता है, कर्म करना हो तो– तत्–सत्–भगवान् का नाम लेकर कर्म करो।

एक बात देखो कोई शास्त्र पर श्रद्धा करता है, तो उसके लिए भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि आप शास्त्र पर श्रद्धा करके ही कर्म कीजिए। क्योंकि शास्त्र–विधि का उल्लंघन करने से सुख–शान्ति की प्राप्ति नहीं होती।

कोई काम करना हो तो वह मनमाने ढंग से मत करो, पहले अनुशासन में रहकर उसको सीखना चाहिए। जो लोग ऐसे समझते हैं कि हम सब पेट में से ही सीख कर आये हैं, भले ही वे पेट में से ही सीखकर आये हों, पर चूंकि बहुत दिन हो गया सीखे और बीच में बचपन आ गया, कुछ न

कुछ भूल गया होगा, इसलिए उसको फिर से सीखकर सुधार लेना चाहिए–सीखकर ही काम करना चाहिए।

'तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ'– जैसे, भले ही पाक्–शास्त्र में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की हुई हो, परन्तु एक बार रसोई बनाते समय देखकर सीखना चाहिए। ऐसे ही भले ही यज्ञ कराने का शास्त्र कोई पण्डित पढ़कर आया हो परन्तु यदि उसने अपने बड़े–बूढ़ों को यज्ञ कराते नहीं देखा है तो पाठशाला में पढ़ा हुआ यज्ञ–शास्त्र काम नहीं दे सकता। तो, कहने का अभिप्राय यह है कि सब काम केवल पढ़ने से नहीं आता है, उसको देखकर सीखना पड़ता है!

अच्छा, एक ओर भगवान् कहते हैं कि कार्य और अकार्य की व्यवस्था में शास्त्र प्रमाण हैं– दूसरी ओर भगवान् यह भी कहते हैं कि:–

जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते।

दोनों का अर्थ दो हो गया कि नहीं ? जहाँ कार्याकार्य की व्यवस्था है–माने क्यों करें और क्या न करें, वहाँ तो आप शास्त्र के अनुसार काम कीजिये, परन्तु यदि आपको बाहर की कर्तव्यता के सम्बन्ध में प्रश्न नहीं हैं और अन्तर में प्रवेश करना है तो वहाँ शास्त्रानुशासन नहीं चाहिए, वहाँ तो योग की जिज्ञासा हुई और जो–जो 'इदं' मालूम पड़ता है, उसको छोड़ते चलिये और जो–जो शेष रहता है उसको पकड़ते रहिये–शब्द ब्रह्म का वहाँ अतिक्रमण हो जाता है, वहाँ आज्ञा नहीं दी जाती है–वहाँ आज्ञा की पहुँच नहीं है–'सोलहों धान बाईस पसेरी' नहीं तौला जाता है।

आप अपने कर्म निश्चित रूप से करते चलिये, कर्म न करने से कर्म करना अच्छा है–माने कर्म पर बहुत जोर है और दूसरी ओर देखो– 'तस्य कार्यं न विद्यते'। एक ऐसी स्थिति आती है जहाँ कर्तव्य नहीं रहता है। तो, श्रद्धालु के लिए भी गीता है, सद्गुणी के लिए भी गीता है, कर्तव्य–परायण के लिए भी गाता है, योगी के लिए भी गीता है–इसका अर्थ है कि यह भगवान् की वाणी सबकी भलाई के लिए है। श्रद्धालु के लिए गीता और बुद्धियोगी के लिए गीता– आप पाप–पुण्य से छूटना चाहते हैं, तो आइये आपको ऐसी बुद्धि बतावें कि आप पाप–पुण्य से छूट जायें।

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुश्कृते।

पाप–पुण्य से छुड़ाने वाली गीता– आप मोह से छूटना चाहते हें तो आइये–

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहं एवं यास्यसि पाण्डव।

तब आपको यह सुनाते हैं कि गीता–भगवती भगवान् की वाणी संसार में जो पतित से पतित हैं, उनका उद्धार करने के लिए भी तत्पर हैं। हमारे मंदिर होते हैं–काशी के मंदिरों में तो प्राय: लिखा होता है, जिसका अर्थ होता है कि जो आर्य–धर्म को मानने वाले नहीं हैं, उनका प्रवेश इस मन्दिरों में निषिद्ध है!

भगवान् कहते हैं कि:-

साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः।

भगवान् कहते हैं कि हम उसको साधु मानें सो नहीं, तुम उसको साधु मानो। यह समाज का कर्तव्य है, यह मानव का कर्तव्य है, कि उसे दुराचारी को भी साधु माने! क्योंकि 'सम्यग्व्यवसितो हि सः'-उसका निश्चय बड़ा ऊँचा है, वह चाहता है साधु बनना। साधु बन सका कि नहीं, बन सका यह प्रसंग दूसरा है, पर वह बनना तो चाहता है न ? उसका उद्देश्य पवित्र है, उसका लक्ष्य पवित्र है और लक्ष्य की पवित्रता से वह श्रेष्ठ हो गया।

गीता योगी के लिए भी हैं, योग के जिज्ञासु के लिए भी है, सद्गुणी के लिए भी है, पतित के लिए भी है, भक्त के लिए भी है, ज्ञान के लिए भी है- गीता समस्त विश्व-सृष्टि का कल्याण करने के लिए है।

मैं तुम्हारे हृदय को अपने व्रत में स्थापित करता हूँ। माने अब आज से जो हमारा व्रत है वही तुम्हारा व्रत है, हम दोनों का व्रत एक है, हमारा मन और तुम्हारा मन दोनों एक हो जाय, हम तुम्हारे पीछे चलें और तुम हमारे पीछे चलो, मैं जो कहूँ उसको तुम ध्यान देकर सुनना, यह मन्त्र है। हमारे कहने का मतलब क्या था कि जब श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों महाभारत की भूमि में एक स्थान पर बैठे तब भगवान ने कहा कि अर्जुन यह जो हमारा तुम्हारा मिलन है इसमें आज हृदयं स्पर्श की प्रक्रिया हो जाये-'गीता में हृदयं पार्थ'-अर्जुन, यह गीता कोई पोथी नहीं है, यह गीता कोई शास्त्र भी नहीं है, यह गीता मेरा हृदय है और जैसे एक मित्र अपने मित्र को, और एक पति अपनी पत्नी को हृदय समर्पण की क्रिया करता है, वैसे मैं आज तुम्हें अपना यह हृदय दे रहा हूँ, अपने हृदय समर्पण की क्रिया करता है वैसे मैं आज तुम्हें अपना यह हृदय दे रहा हूँ-यह गीता भगवान् का हृदय है। यह गीता का उपदेश हृदय दान की प्रक्रिया है। आप यदि भगवान् का दिल प्राप्त करना चाहते हैं तो आप गीता से प्राप्त कीजिए और जब भगवान् ने अपना हृदय निकालकर अर्जुन के शरीर में रख दिया तब बोले जो तुमसे द्वेश करता है वह मुझसे द्वेश करता है और जो तुम्हारे पीछे चलता है वह मेरे पीछे चलता है। संजय से कहा भगवान ने कि जाकर धृतराष्ट्र से कह दो कि ''कृष्णो धनंजयस्य आत्मा कृष्णस्य आत्मा धनंजयः'-कृष्ण की आत्मा का नाम अर्जुन है और अर्जुन की आत्मा का नाम कृष्ण है, जो कृष्ण और जो अर्जुन है सो कृष्ण है।

योगेशं सच्चिदानन्दं, वासुदेवं व्रजप्रियम्। धर्मसंस्थापकं वीरं, कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।

वसुदेवसुतं देवं, कंसचाणूरमर्दनम्। देवकीपरमानन्दं, कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।

।। गीता माता की जय।।

गुरु तत्व

(पूज्य गुरुदेव की वाणी से)

नारायणसमारम्भायम् शंकराचार्यमध्यमाम्। अस्मदाचार्य पर्यन्तामः वंदे गुरु परम्पराम
शंकरम् शंकराचार्यं केशवं बादरायणम्। सूत्रभाष्य कृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः।।
ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्तिभेदविभागिने। व्योमवद् व्याप्तदेहाय दक्षिणामूर्तये नमः।

।। श्री सद्गुरुदेव भगवान की जय।।

गुरुतत्व, इसमें दो शब्द हैं, पहला गुरु दूसरा तत्व, हमलोग अगर व्यावहारिक दृष्टि से विचार करें तो, जो श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ, विरक्त महापुरुष हैं, उनको सद्गुरु के रूप में हमारे सनातन धर्म में स्वीकार किया जाता है। जैसे पूज्य रोटीराम बाबा जी, पूज्य स्वामी अखंडानंद महाराज जी, पूज्य स्वामी सत्यानंद महाराज जी (मुंगेर वाले), ऐसे जो सिद्ध पुरुष हैं, जिनके जीवन में ब्रह्मतत्व की निष्ठा है, वो दिखाई देती है, ब्रह्म सत्यम् जगन् मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः, ये सिद्धांत जिनके जीवन में परिलक्षित होता है, अर्थात् पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा तीनों के प्रति जिनका आकर्षण समाप्त हो चुका है, तीनों जिनकी दृष्टि में मिथ्यात्व की श्रेणी में आ गये हैं, उनको सरल शब्दों में कह सकते हैं, कंचन, कामिनी और कीर्ति तीनों के प्रति जिनका आकर्षण समाप्त है, जिनकी दृष्टि में मिथ्या है, हमेशा रहने वाले नहीं है, दिखाई देते हैं ऐसे महापुरुषों को हम सद्गुरु कहते हैं। और वो सद्गुरु शरीर के रूप में जब रहते हैं, तो हमारे शास्त्रों का कहना है, यथा देवो तथा गुरूः। हमलोग जैसे भगवान् की सेवा करते हैं, भगवान् के विग्रह की सेवा करते हैं, वैसे ही सद्गुरु के विग्रह की सेवा करनी चाहिए, जब हम उनको सगुर्ण–साकार के रूप में मानते हैं।

जो गुरु तत्व है, वास्तव में सद्गुरु वही होते हैं, जो अपने आपको सर्वत्र अनुभव करते हैं, सभी के आत्मा के रूप में अपने आपको ही देखते हैं, एक ब्रह्म तत्व कहें, गुरुतत्व कहें, आत्मतत्व कहें, ये तीनों कहने के लिए तीन हैं, वास्तव में एक ही हैं, एक ही ब्रह्म सब रूपों में विद्यमान हैं, ब्रह्म का विवर्त और माया का परिणाम, ये सारा संसार है, वो ब्रह्म तत्व का जो अनुभव कर अपने जीवन में ब्रह्मानंद की अनुभूति कर रहे हैं, जीवन्मुक्ति का आनंद ले रहे हैं, उनको हम सद्गुरु कहते हैं, और उस तत्व का जिस तत्व के अनुभूति में हमेशा वो लीन रहते हैं, आनंदमग्न रहते हैं उसको हम लोग ब्रह्मतत्व बोलते हैं, गुरुतत्व बोलते हैं, आत्मतत्व बोलते हैं। और भी गुरु का अर्थ होता है जो अंधकार से प्रकाश की ओर हमको ले चले शिष्य वर्ग को जो आत्म तत्व का अनुभव करा दे। जिस अनुभूति को वो स्वयं कर रहा है, उस अनुभूति में अपने शिष्य को पहुँचा दे, उसका नाम होता है गुरु। और वो जिस तत्व में परिनिष्ठित है, जिस आत्मा की अनुभूति का आनंद ले रहा है, उसको बोलते हैं गुरुतत्व।

गुरुतत्व एक बहुत सुन्दर शब्द है, जिसमें गुरु की व्याख्या और तत्व की व्याख्या दोनों सन्निहित है, आप लोगों ने सुना ही होगा, समझा ही होगा, हमारे गुरुदेव पूज्य स्वामी श्री अखंडानंद जी महाराज, उनके प्रवचन में एक बार एक साधक आये, गुरु जी के प्रभाव से इतने प्रभावित हुए कि प्रवचन के बाद उन्होंने गुरुजी से निवेदन किया कि, हमने गुरुमंत्र की दीक्षा तो किसी और से ले ली है। लेकिन हमको लगता है कि आपको ही सद्गुरु के रूप में स्वीकार करना चाहिए। तो क्या हम दोबारा दीक्षा आपसे ले सकते हैं! हमारे गुरु पूज्य अखंडानंद महाराज जी ने बहुत सहजता से जबाव दिया, जिस भी महात्मा से तुमने गुरुमंत्र की दीक्षा ली है, वो मैनें ही तुमको गुरु मंत्र दिया है, उस रूप में दोबारा गुरुदीक्षा लेने की आवश्यकता नहीं है। तुमको जो मार्गदर्शन चाहिए वो मैं तुम्हारा पूर्ण मार्गदर्शन करूंगा, अध्यात्म के रास्ते में आगे बढ़ाऊंगा, इसका नाम है गुरुनिष्ठा, इसका नाम है तत्वनिष्ठा, इसका नाम है ब्रह्मनिष्ठा, कहने के लिए तो सभी कहते हैं, कि सब एक हैं, सब ब्रह्म हैं, सब आत्मा हैं, लेकिन सबमें एकता का अनुभव हमने अपने गुरुदेव में देखा है, पूज्य स्वामी अखंडानंद जी, पशु-पक्षियों में, मनुष्यों में, उनके लिए कोई अमीर-गरीब का भेद नहीं था, विद्वान्-बेवकूफ का भेद नहीं था, मनुष्य और पशु-पक्षियों को भेद नहीं था।

एक बार तो हम लोगों ने देखा मथुरा वृंदावन में राधा-रानी करके एक ट्रेन चलती थी, गुरुदेव लेटे हुए थे, वो हॉर्न दे रही थी, स्टार्ट होने के लिए, गुरुदेव बार-बार कह रहे थे, जाइये-जाइये हम सोच रहे थे, किसको जाइये-जाइये कह रहे हैं, हमने पूछा महाराज जी आप किसको कह रहे हैं जाइये-जाइये। बोले वो राधा रानी ट्रेन हॉर्न दे रही है, उसको कह रहे हैं। तो जिनको ट्रेन के रूप में, पशु-पक्षियों के रूप में, गरीब-अमीर के रूप में अपनी आत्मा का अनुभव होता था, ऐसे हमारे सद्गुरु थे, पूज्य स्वामी श्री अखंडानंद जी महाराज, उन्हीं से हम लागों ने गुरुतत्व सीखा है, गुरुतत्व क्या होता है? उसकी निष्ठा क्या होती है? उसकी पहचान क्या होती है? क्या आप सभी लोगों को यथामति बताया गया, और इसका कोई अंत नहीं है अनिर्वचनीय विषय है क्योंकि तत्व के विषय में जो भी बोला जायेगा, वह द्वैत हो जायेगा। तत्व अद्वैत है, शब्द मात्र निकलने से द्वैत हो जाता है क्योंकि एक व्याख्या करने वाला और एक और जिसकी व्याख्या हो रही है वो, तो एक हो गया वक्ता और एक हो गया वक्ता का विषय तो शब्द निकलते ही द्वैत हो जाता है, यत्किंचित् उसका विवेचन किया जा सकता है, गुरुतत्व का, लेकिन वास्तव में गुरुतत्व अनिर्वचनीय है, उसका पूर्ण विवेचन कोई भी कर सके ऐसा संभव नहीं है। बोलते ही द्वैत हो जाता है, इसलिए गुरुतत्व की महिमा गुरुतत्व का अनुभव ऐसे सिद्ध महापुरुषों के चरणों में बैठने से और बैठने से ही नहीं जिज्ञासा करने से, और केवल जिज्ञासा करने से ही नहीं उनकी सेवा करने से, उनकी सेवा भी करो और सत्संग भी करो। ये दोनों कार्य जब होंगे, तो सिद्ध महापुरुषों की कृपा से उस गुरुतत्व का अनुभव होता है।

।। जय श्रीराम, जय श्रीराम, जय श्रीराम ।।

पूज्य स्वामी गिरीशानंदजी की जीवन यात्रा के प्रश्नोत्तर

मोक्षदायिनी, पुण्य सलिला माँ नर्मदा के पावन एवं पवित्र आँचल में स्थापित जबालिपुरम वैसे तो ज्ञान, विज्ञान, धर्म, आध्यात्म, शिक्षा, साहित्य, साँस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं सामाजिक विभूतियों की कर्मस्थली एवं जन्म स्थली रही है। उसी धरा ने अनेक साधू-संतों एवं तपस्वियों को ज्ञान, कर्म और धर्म के माध्यम से पूरे भारत और भारत के बाहर संस्कारधानी जबालिपुरम वर्तमान में जबलपुर के नाम की आभा बिखेरी है। माँ नर्मदा का ऐसा पुण्य प्रताप है कि जो भी जहाँ एक बार आया फिर किसी न किसी रूप में वो यहाँ का होकर रह गया। या यूँ कहूँ कि माँ नर्मदा की इस पुण्यधरा को अपनी कर्मस्थली बनाकर अपने जीवन को एक नयी दिशा प्रदान की और अपने मन-वचन, और कर्म के माध्यम से जनमानस की भलाई में अपना सर्वस्व जीवन अर्पित करने वाले महान गुरुओं, संतों और विभूतियों को इस नगरी में एक ऐसी महान विभूति का सन् 2002 में संस्कारधानी में आना हुआ, जो स्वयं, प्रेम, करुणा, त्याग, समर्पण, आध्यात्म, की पावनधरा वृदावन एवं पुण्य सलिला माँ यमुना के तट से अपने परम पूज्य गुरुदेव के देवलोक गमन के पश्चात् पुण्य सलिला माँ नर्मदा के तट गौरीघाट आये, और उन्हें यहाँ आने के बाद आत्मिक शांति और सकारात्मक तरंगों का आभास हुआ और फिर बिना समय गंवाये उन्होंने इसी पुण्य धरा को अपनी कर्मस्थली बनाने का निर्णय लिया। वैसे इसका श्रेय जमुनिया वाले दादाजी पूज्य शास्त्री जी को जाता है। वो ही इस महान व्यक्तित्व को गौरीघाट के उस तट पर ले गये, जो आज पूरे भारत वर्ष में ''**साकेतधाम**'' के नाम से जाना जाता है। और इसी धाम के संस्थापक मानस मर्मज्ञ, विश्व-विख्यात भागवत कथा वाचक, मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम के उपासक अनंत विभूषित पूज्य संत स्वामी गिरीशानंद सरस्वती जी पूरे भारत वर्ष और विदेशों में भी अपने ज्ञान की आभा, और वाणी एवं विचारों से जबालिपुरम् का नाम राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने वाले। एक ऐसे ही बिरले पर ओजस्वी, एवं ज्ञान वाणी एवं विचार के आभा मण्डल से लोगों को आकर्षित करने वाले, पथ-प्रदर्शक की भूमिका का निर्वाहन करने वाले पूज्य संत स्वामी श्री गिरीशानंद जी सरस्वती महाराज से धर्म, अध्यात्म एवं भगवत पर चर्चा के दौरान पत्रकार वार्ता की उसके प्रमुख अंश:-

आपकी साधना स्थली पूर्व में कहाँ रही ?

मेरी साधना स्थली दो रही हैं। पहली पूज्य रोटीराम बाबा की गायत्री तपोभूमि सुमेरपुर जिला हमीरपुर उत्तरप्रदेश, और दूसरी साधना स्थली पूज्य स्वामी अखंडानंद जी के आश्रम में श्रीधाम वृंदावन में।

प्रभु श्री कृष्ण के पवित्र धाम वृंदावन से माँ नर्मदा की नगरी जबलपुर आना कैसे हुआ ?

मेरे पूज्य गुरु का 1987 में देवलोकगमन हो गया, परन्तु उनके बाद वहाँ मुझे अकेलापन महसूस हुआ और मैंने गंगा किनारे कई स्थान देखे पर मन नहीं भरा उस समय वहाँ मठ/मठाधीश अधिकांश राजनैतिक विचारधारा के प्रेरक थे। मेरे पूज्य गुरु की शिक्षा और विचारों के अनुरुप मुझे वहाँ अच्छा नहीं लगा। इसी बीच मुझे जमुनिया वाले दादा जी शास्त्री जी पंडित द्वारकाप्रसाद जीम मुझे यहाँ लाये बोले गंगा किनारे नहीं जम रहा तो माँ नर्मदा किनारे आकर अपनी साधना स्थली बनाओ और फिर आकर मैनें गौरीघाट के करीब 1 किलोमीटर के तट पर घूमा पर अचानक एक जगह मुझे कुछ तरंगों का ऐहसास हुआ, और माँ नर्मदा को इच्छा और आशीर्वाद था कि काफी प्रयासों के बाद गौरीघाट का यह वहीं तट है जिसे मैंने अपनी साधना स्थली के रूप में मैंने चुना और आज मैंने और मेरे भक्तों के द्वारा उसे हमने संवार कर साकेतधाम बना दिया और यहीं बस गये।

आप यहाँ कब आये ?

सन् 2002 में जमीन ली। 2004 में आश्रम का शुभारंभ हुआ और 2005 में रामेश्वरम महादेव की स्थापना की।

आप माँ गंगा और प्रभु श्रीराम को अपना इष्ट मानते हैं। पर आपने अपनी साधना एवं कर्मस्थली में महादेव को मंदिर बनाया ?

हमारे ईष्ट तो श्रीराम जी और हनुमान जी हैं। पर सोचा यही था कि राम जी का मंदिर बनायें, तभी पूज्य बाबा कल्याण दास जी ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम की पूजा भी मार्यादा के अनुसार ही होती है, श्रीराम जी की पूजा विधि विधान से करना चाहिए नहीं तो दोष लगता है, क्योंकि वह राजाधिराज हैं और मैं अधिकांश समय बाहर रहता हूँ। तो उन्होंने कहा कि महादेव जी राम के मित्र भी हैं, राम जी के आराध्य भी हैं और रामजी के सेवक भी हैं, हनुमान जी के रूप में सेवक है, रामेश्वरम के रूप में अराध्य हैं, तो उन्होंने कहा कि शिवजी की स्थापना कर दो, और बस इस तरह रामेश्वरम् महादेव की स्थापना हो गयी।

भागवत का क्या अर्थ है ?

भागवत के अनेक अर्थ होते हैं। भगवान ने जिसको सर्वप्रथम कहा वह भागवत है। भगवान के भक्तों का पुराण, जिसमें भगवान के भक्तों की कथा होती है। वही भागवत है, भागवत एक ग्रंथ है, और उसमें भक्ति की कथायें हैं। जो ग्रंथ के रूप में साहित्य के रूप में पुराण के रूप में, या यूं कहूँ शब्दों के रूप में कथा के रूप में, भगवत कथा है। भागवत कथा भगवत् के रूप में साक्षात् भगवान हैं भगवान की यह वांग्यमयी शब्दों की वाक्यों की बनी हुई एक मूर्ति है लोगों के जहन में भागवत

कथा सुनाई गई कोई कहानी है, परन्तु यह कहानी नहीं, कथा नहीं है, यह हमारे हृदय का ही चित्रण है क्योंकि श्रीमद् भागवत कथा में जितने पात्र हैं वह हमारी एक एक मनोवृत्ति के प्रतीक हैं उनके चरित्र का जो वर्णन है, वह हमारे मन का हमारे हृदय का और हमारे हृदय को प्रकाशित करने वाले का उसको शक्ति देने वाले का और उसको कर्म में लगाने वाले का एक वृतांत वर्णन है।

श्रीमद्भागवत कथा में किने श्लोक और अध्याय हैं ?

श्रीमद् भागवत कथा में 18,000 श्लोक हैं, 335 अध्याय है, और भगवान के वृहद् स्वरूपों को वर्णन करने वाले 12 स्कंद है।

श्रीमद्भागवत का मूल उद्देश्य क्या है ?

एक आध्यात्मिक उद्देश्य है और एक व्यवहारिक पारिवारिक जीवन में कैसे सुखी जीवन व्यतीत कर सकें यह व्यवहारिक उद्देश्य है जबकि भगवान के स्वरूप का जिसमें ध्यान हो वर्णन हो मनुष्य जान सके वो भागवत का आध्यात्मिक उद्देश्य है।

आपने पहली भागवत कथा कब और कहाँ की ?

जुलाई 1996 में मेरी साधना स्थली वृंदावन में मैंने पहली भागवत कथा की थी।

आपने अभी तक कितनी कथायें की हैं ?

कभी गिना नहीं में गणना नहीं करता। पर हाँ वर्ष में 8 से 10 भागवत कथा होती हैं। उस हिसाब से औसतन 200 के लगभग हुई।

भारत के अलावा और कहाँ पर आपने भागवत कथा की ?

भारत के अलावा सिंगापुर, दुबई, जर्मनी, हांगकांग और नेपाल में जाकर भागवत कथा की।

श्रीमद्भागवत मनुष्य के निर्माण का और प्रेम का संदेश देती है। पर आज बहुत से लोग यह कथा करा रहे हैं पर वातावरण में उतनी की कड़वाहट है क्यों ?

भागवत कथा का उद्देश्य क्या है ? उसके वक्ता कैसे हैं, उनको कराने वाले आयोजकों का उद्देश्य क्या है ? इन सभी चीजों पर भी भागवत का फल निर्भर होता है। अगर भागवत कराने वाले का उद्देश्य भगवान से जोड़ना है, व्यवसायिक नहीं है, दिखावे के लिए नहीं है, आडम्बर नहीं है, कुल मिलाकर वक्ता और आयोजक दोनों का उद्देश्य शुद्ध होगा तथी भागवत का फल पूरा मिलेगा। वर्तमान में कभा में भगवान के प्रति भाव कम बल्कि दिखावा ज्यादा हो रहा है, इसलिए फल में कमी आ रही है।

आपने सन्यास दीक्षा कब ली ?

सन्यास दीक्षा के 3 क्रम होते हैं। पहला ब्रह्मचारी की दीक्षा 1980 में, दूसरा नैष्ठिक दीक्षा 1985 में,

और अंतिम दीक्षा 2008 में सन्यासी की दीक्षा ली।

श्रीमद्भागवत निर्माण का उद्देश्य क्या है ?

श्रीमद्भागवत का उद्देश्य यही है कि भगवान सब में हैं और सब के प्रति प्रेम करना और सब में भगवान का ज्ञान होना और अभिमान में आकर अहंकार में आकर या लोभ द्वेष में आकर ऐसी जगह अपने मन को नहीं फंसा देना जहाँ हम भगवान को भूल जायें किसी की भावना में बहकर दूसरों को हानि पहुँचा दे या किसी शत्रु से इतनी शत्रुता कर बैठे कि उसको और दूसरों को हानि पहुँचा दे, सबके मान में भगवान का चिंतन, भगवान का स्मरण और अपने कर्म का अहसास बना रहे। लोग जो भी काम करे वह समभाव को ध्यान में रखकर करे, क्योंकि सबके हृदय में भगवान हैं और मुझे ऐसा लगता है कि इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर श्रीमद्भागवत कथा की संयोजना की गई है। यही श्रीमद्भागवत् कथा का मूल संकल्प भी है।

युवा पीढ़ी भयभीत क्यों है ?

क्योंकि न तो उन्हें कर्म का पता है और न ही ईश्वर की भक्ति का पता है। उसे ईश्वर पर भरोसे की कमी है। युवा पीढ़ी चमत्कार की दौड़ में मंदिर जाते हैं। ईश्वर और अपने कर्म पर अगर भरोसा रहे तो युवा भवभीत नहीं होंगे।

अलंकरण समारोह शुरूआत करने के पीछे कोई उद्देश्य ?

मैं आश्रम में स्वामी मुक्तानंद जी और कृष्णकांत चतुर्वेदी के साथ बैठा था और चतुर्वेदी जी ने बात रखी कि पूज्य गुरुवर की स्मृति में कुछ ऐसा किया जाये जिसमें कुछ हटकर हम उनका स्मरण करें और तभी उनकी स्मृति में ''अखण्डानंद सरस्वती विशिष्ट व्यक्तित्व अलंकरण'' की शुरुआत की और इसमें ऐसे व्यक्ति को सम्मान दिया जाने लगा, जिसने अपने जीवन में ईमानदारी निभायी हो, जिसने देश और समाज के लिये कुछ किया हो।

वर्तमान शिक्षा पद्धति पर कोई विचार ?

आज वर्तमान में शिक्षा व्यवस्था पर बहुत सुधार की आवश्यकता है। आज की नितांत आवश्यकता है शिक्षा को धर्म से जोड़ना, नई पीढ़ी को जब यह ज्ञान शुरु से ही मिलेगा, तभी तो वह रुचि लेगा, जानेगा।

आज की युवा पीढ़ी भागवत या अन्य कथाओं से दूर होती जा रही है ?

आज का युवा चमत्कार को नमस्कार वाली युक्ति पर काम करता है। जबलपुर में तो ठीक है पर बड़े शहरों में युवा अंग्रेजी माध्यमों में पढ़े और उनका पारिवारिक कल्चर में भी अंग्रेजी का समावेश ज्यादा है। और कथा पाठ में संस्कृत और हिन्दी में और दूसरा युवा पीढ़ी पाश्चात्य

सभ्यता को अपनाना भी कारण है। पर वो हृदय के साफ होते हैं। पर युवा पीढ़ी को कनविन्स किया जाये तो वह आगे आयेंगे। आज कल धार्मिक कार्यक्रमों में बहुत जुड़े हैं।

माँ नर्मदा की सफाई की बात करते हें ? और हम मूर्ति पूजा कर उसी में विसर्जित कर उसे अशुद्ध कर रहे हैं ?

यह समझ की कमी है, जब साक्षत् माँ नर्मदा प्रवाहित हैं, तो उसकी मूर्ति रखकर पूजा करने का उद्देश्य समझ से परे है। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि हम जिनका जन्मदिन मना रहे हैं उन्हीं की मूर्ति उन्हीं के जल में उसी दिन विसर्जित कर रहे हैं। इससे बड़ी ना समझी हो ही नहीं सकती। पूजा करना ही है तो कलष रखकर पूजा करें, तो ज्यादा अच्छा है।

सुखी जीवन का मंत्र क्या है ?

इच्छाओं और तृष्णाओं को कम करें, संतुष्ट होना सीखें, जितना हम अपने लिए करते हैं, उससे 5 प्रतिशत ज्यादा परिवार के लिए करने लग जाये तो एक न एक दिन वह आपके प्रति समर्पित की भावना के तहत् सामंजस्य बिठा लेंगे।

अगर आप आध्यात्म के क्षेत्र में आकर संत न बने होते तो क्या बनते ?

(मुस्कुराते हुये) बड़े ही सरल शब्दों में महाराज जी कहते हैं कि गांव में 10वीं की पढ़ाई की, और आगे पढ़ाई करके मेरी इच्छा आईएएस अफसर बनने की थी, पर पूज्य रोटीराम बाबा के सत्संग प्रवचन में जाते-जाते 15 वर्ष की उम्र में ही आध्यात्म की तरफ झुकाव हो गया। पूज्य रोटीराम बाबा दूरदृष्टा थे, और उन्होंने मुझे इस तरफ आने के लिये प्रेरित किया।

आज के संदर्भ को रामचरित मानस से जोड़े, तो क्या परिलक्षित होगा ?

आज के संदर्भ में यदि रामचरित मानस से जोड़ा जाये तो अजीब सी भिन्नता देखने को मिलती है, राम के आचरण में सत्ता के प्रति कहीं कोई मोह नहीं दिखता। भरत की गद्दी मिलने की बात से ये प्रसन्न होते हैं, तो स्वर्णमयी लंका को जीतने के बाद उसे देखने तक नहीं जाते। लेकिन आज तो परिस्थितियाँ भिन्न है। आज तो हर राजनीतिक सत्ता का आकांक्षी है। राम ने तो सत्ता छोड़ी, मगर राजनीतिज्ञ सत्ता के पीछे दौड़ रहे हैं।

रामचरितमानस की व्याख्या हरेक व्याख्याकार अलग-अलग तरह से करता है? ऐसा क्यों ?

''हरि अनंत हरि कथा अनंता, कहहिं सुनहिं बहुविधि सब संता'', भगवान श्रीराम अनंत हैं और उनकी कथा भी अनंत है। संतों द्वारा भगवान के इस मंगलमय चरित्र की चर्चा विविध रूपों में की जाती है। यह वाक्य रामचरितमानस के विभिन्न प्रसंगों में कई बार दुहराया गया है। गोस्वामी

गुरुदेव पू. सन्तों की मध्य

गुरुदेव की विभिन्न मुद्राएं

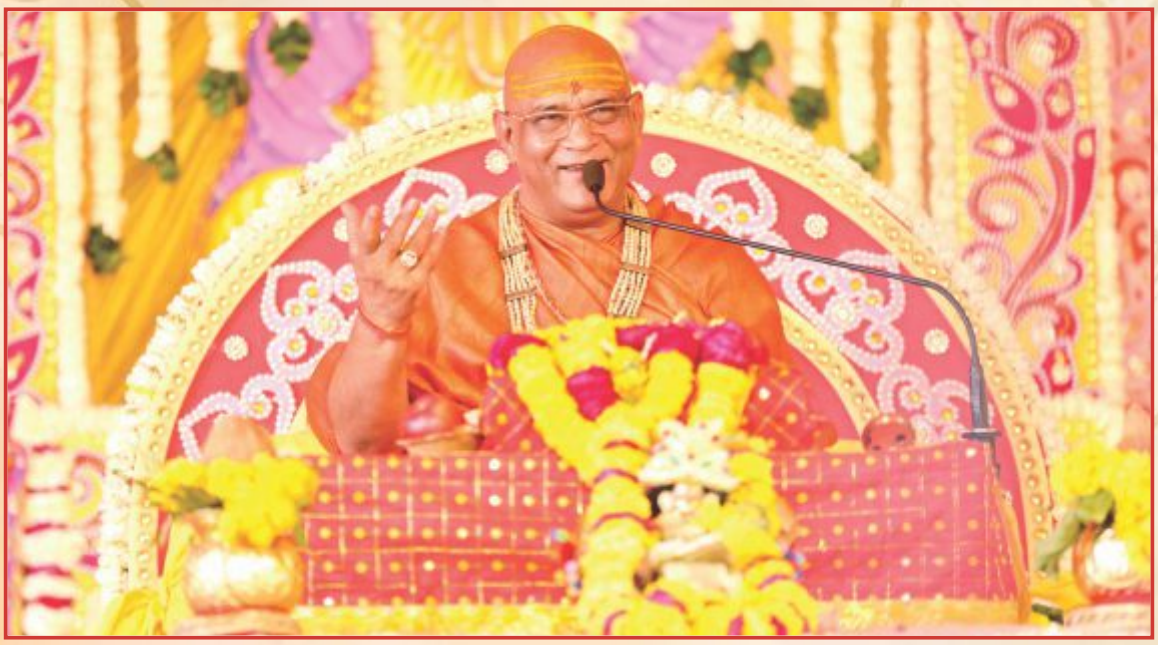

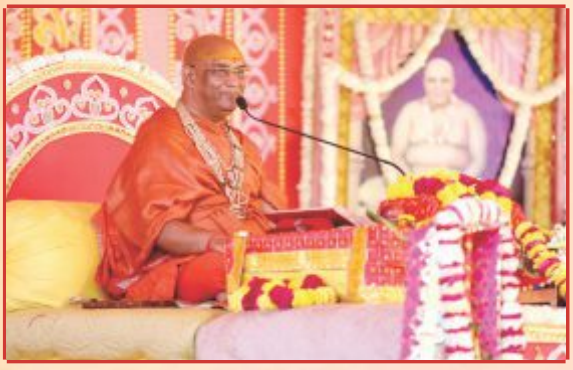

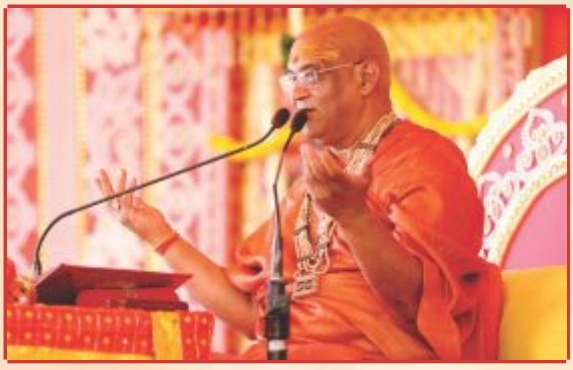

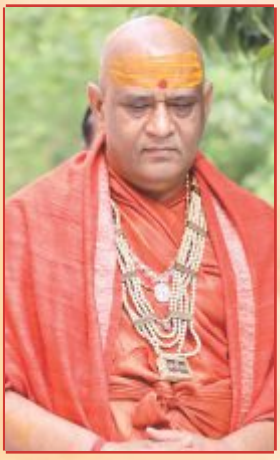

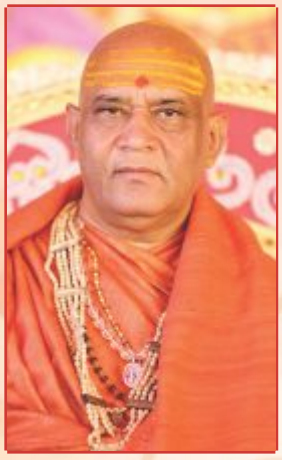

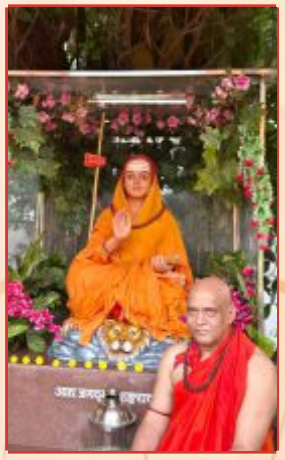

21वाँ पाटोत्सव

21वाँ पाटोत्सव

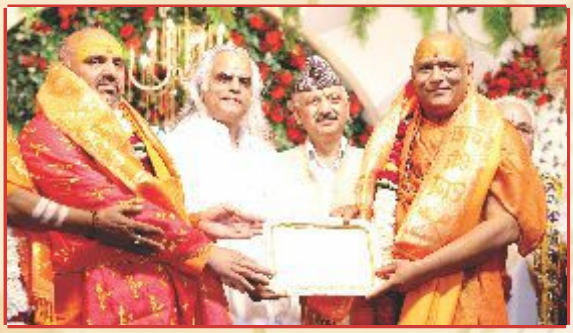

श्रीमद् भागवत् कथा वृन्दावन

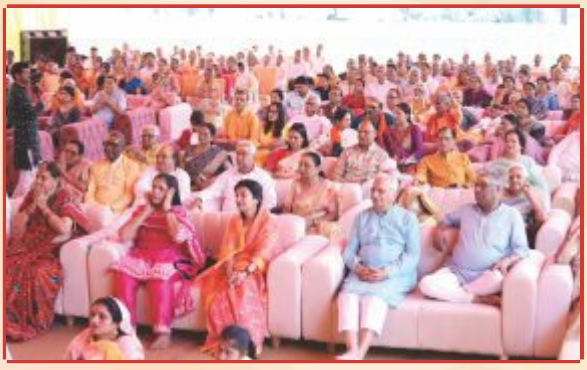

श्रीमद् भागवत् कथा वृन्दावन की झलकियाँ

श्रीमद् भागवत् कथा वृन्दावन की झलकियाँ

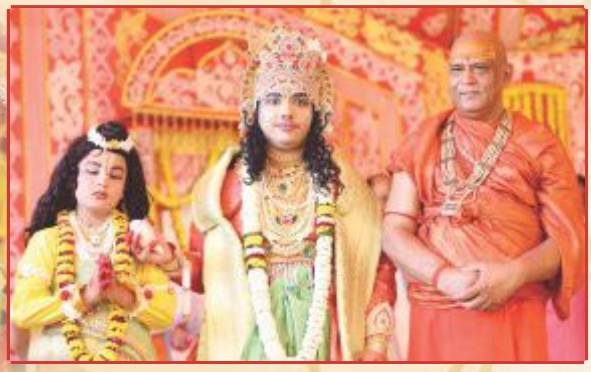

गुरुदेव भक्तों की साथ

पूज्य गुरुजी विशिष्ट जनों के साथ

पूज्य गुरुजी विशिष्ट जनों के साथ

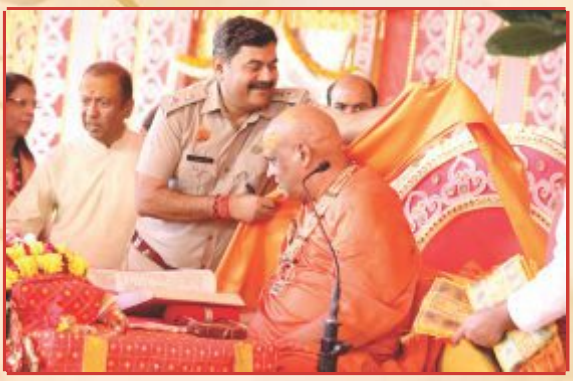

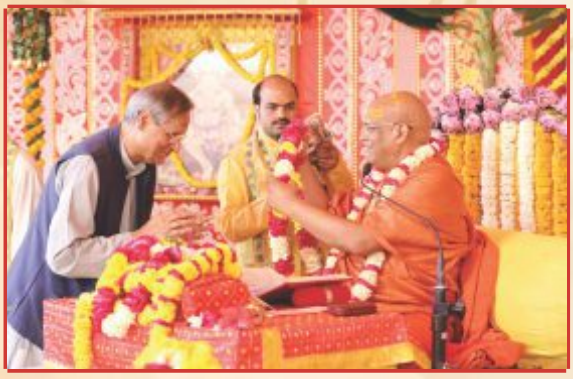

गौरी घाट - नर्मदा पूजन

वृक्षारोपण-पर्यावरण संरक्षण

तुलसीदास जी इस ग्रंथ की रचना करते समय प्रारंभ में ही श्रोता और पाठक को बता देना चाहते हैं कि यह वही रामकथा है, जिसे भगवान शंकर ने भगवती उमा को सुनाया। यही परंपरा कागभुसुण्डि और गरूड़ के संवाद में, याज्ञवल्क्य और भारद्वाज के संवाद के रूप में और गोस्वामी जी के द्वारा कथित कभा के संदर्भ में संसार के समक्ष सुधी जनों के समक्ष आती है।

क्या परोपकार ही जीवन है ?

परोपकार ही जीवन है। परोपकार की भावना चाहे देश के प्रति हो या किसी व्यक्ति के प्रति, वह मानवता है। परोपकार से ही ईश्वर प्राप्ति का मार्ग खुलता है। परोपकार से मनुष्य जीवन की शोभा और महिमा बढ़ती है। सच्चा परोपकारी दूसरे का कार्य करके हर्ष की अनुभूति करता है। परोपकार की एक आध्यात्मिक उपयोगिता भी है। वह यह है कि हम दूसरों की आत्मा को सुख पहुँचा कर अपनी ही आत्मा को सुखी बनाते हैं।

आपके ईष्ट, आदर्श एवं गुरु कौन हैं ?

मेरे ईष्ट मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हैं और माँ नर्मदा हैं मेरे गुरु ही मेरे आदर्श और प्रेरणा स्रोत हैं। पूज्य रोटीराम बाबा एवं पूज्य स्वामी श्री अखण्डानंद सरस्वती महाराज जी मेरे गुरु हैं।

प्रार्थना का महत्व

प्रार्थना परमात्मा की कृपा पाने का प्रथम साधन है। हमारे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद में सबसे पहले भगवान् की प्रार्थना ही की गयी। प्रार्थना में ईश्वर के साथ सम्बन्ध जुड़ता है और फिर परमात्मा की कृपा का रस मानव के जीवन में उतरता है। प्रार्थना वह रस प्रवाहिनी शक्ति है जिससे मानव का हृदय प्रसन्न, बुद्धि शुद्ध व आचरण श्रेष्ठ होता है। प्रार्थना हमारे हृदय रूपी भवन में झाड़ू का भी काम करती है। वह सारे विकारों को बाहर कर, मन को शुद्ध बना देती है।

प्रार्थना एक दिव्य मंत्र है। और परमेश्वर को बाँधने वाली एक जंजीर है। प्रार्थना वह दिव्य तत्व है कि जब आँख बंदकर आप भगवान् को देखने का प्रयत्न करते हैं, तब आपको दिखता है कि वह (भगवान) इतनी दूर नहीं है, जितना हम मानते हैं। प्रार्थना आवरणों को हटा देती है, पर्दों के पीछे छिपा हुआ भगवान् प्रार्थना के माध्यम से ही दिखाई पड़ता है। प्रार्थना, परमात्मा रूपी माता के सामने पुत्र का रुदन है और प्रेम से उसके लिये हम रोयें तो वह दोड़कर हमारी आवश्यकतायें पूर्ण करता है। ''योगक्षेमं वहाम्यहम्'' परमात्मा की प्रतिज्ञा है। प्रार्थना का ध्वज लेकर विजय के मार्ग पर चलिये, भगवान् आपके साथ है। ईश्वर आपका कल्याण करेगा। प्रार्थना सबके लिये मंगलमयी हो, यही शुभकामना है।

पुरुषार्थ चतुष्टय

(पूज्य गुरुदेव की वाणी से)

।। जय श्री राम ।।

त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे।

हम सभी मनुष्य मात्र के लिए पुरुषार्थ चतुष्टय हमारे जन्म लेने का उद्देश्य है। पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष हैं। धर्म का अर्थ होता है, जिसको धारण करने से हमारे जीवन की रक्षा होती है। हमको सद्गति मिलती है, हमारा जीवन उज्जवल होता है। इस लोक में भी और परलोक में भी, अर्थ आप सभी लोग जानते ही हैं, अपने जीवन-यापन के लिए जीविका के लिए जो अर्थोपार्जन है, व्यवसाय के माध्यम से या सर्विस के माध्यम से जो आवश्यक है परिवार के लिए और कुछ परिवार से अतिरिक्त जरूरतमंदों की सेवा के लिए गौ सेवा, और संत सेवा, विद्यार्थी सेवा जहाँ-जहाँ भी आवश्यकता होती है, उसकी सेवा के लिए अर्थ और पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। काम पुरुषार्थ का अर्थ है, हम लोग ऐसा जीवन जियें शनैः-शनैः, धीरे-धीरे हमारी इच्छाएँ कम होती जाएँ। कामनाओं की निवृत्ति का नाम ही काम पुरुषार्थ की सफलता है। हमारा जीवन अगर व्यवस्थित रहेगा, तो दुनिया की इच्छाएँ धीरे-धीरे कम होती जायेंगी और भगवत इच्छा या आत्मतत्व की इच्छा, बढ़ती जायेगी, तो समझना चाहिए कि काम पुरुषार्थ हमारे जीवन में सफल हो रहा है। मोक्ष पुरुषार्थ का अर्थ है भगवद्धाम की प्राप्ति या जीवन मुक्ति का अनुभव। भक्ति की दृष्टि से भवगद्धाम की प्राप्ति कहते हैं, और वेदान्त की दृष्टि से उसको आत्मानुभूति या आत्म साक्षात्कार, ब्रह्मानुभूति, जीवनमुक्ति, अनेक शब्दों से उसे कहा जाता है। ये चारों पुरुषार्थ का बैलेन्स हमारे जीवन में रहना चाहिए।

आज भी भाषा में अगर इन शब्दों को थोड़ा परिवर्तित करके बोलें, तो धर्म का अर्थ है, माता-पिता की सेवा करना, पत्नी और बच्चों का ध्यान रखना। माने हमारा जो कर्तव्य है, जिन माता-पिता ने हमको जन्म दिया है, जिन्होंने बालपन से लेकर युवावस्था तक देख-रेख किया है, हमारी शिक्षा की व्यवस्था की है, स्वास्थ्य की व्यवस्था किया है, आर्थिक व्यवस्था किया है, वो माता-पिता का ऋण हमेशा बच्चों पर रहता है। उस माता-पिता की सेवा करना हमारा कर्तव्य है, तो आज की दृष्टि से व्याख्या करें तो प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है, कि माता-पिता की सेवा, पत्नी का ध्यान रखना और अपने बच्चों के लिए समय व्यतीत करना। ये है आज की भाषा में धर्म। अर्थ है जिसको हम लोग कमाई बोलते हैं, जिसको हम लोग जीवन की मुख्यधारा जिससे आज सारा समाज जुड़ा हुआ है, आज अर्थ के लिए अर्थात् लक्ष्मी प्राप्ति के लिए सम्पत्ति के लिए व्यक्ति पूरा-पूरा समय दे रहा है, जो कि शास्त्र में वर्जित है। हमारे शास्त्रों में 10 से 12 घण्टा व्यवसाय हो, या

सर्विस हो उसके लिए देना चाहिए। जितना आना है, उतने में आ जायेगा और जो नहीं आना है वो 16 घण्टा काम करने से भी नहीं आयेगा। ऐसा अनेक बिजनेसमेन कहें, या अनेक व्यवसायी कहें, या नौकरी पेशा के जीवन के अंत में देखा जाता है। कभी-कभी थोड़े प्रयास से बहुत कुछ प्राप्त हो जाता है और कभी-कभी बहुत प्रयास करने से भी नुकसान हो सकता है, इसलिए अर्थ पुरुषार्थ के लिए भी एक बैलेन्स टाईम भी हमारे जीवन में होना चाहिए।

तीसरा है काम पुरुषार्थ, आज की भाषा में अगर उसकी व्याख्या करें, तो अपने शरीर का ध्यान रखना, उसके लिए हम प्राणायाम करें, योगासन करें, आज के परिस्थिति में शहरों में जहाँ सुविधा नहीं है, वहाँ जिम करें, माने किसी भी तरह से फिजिकली एक्टिविटी प्रतिदिन हमारे जीवन में होना चाहिए। जैसे कि जो मशीनरी है, जिसके द्वारा हमको लक्ष्य की प्राप्ति करना है, शरीर रूपी मशीनरी ये व्यवस्थित रहे, स्वस्थ रहे, और प्रसन्न रहे। जब शरीर स्वस्थ रहेगा तो किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। और शरीर ही अस्वस्थ हो गया तो, सब कुछ रहते हुए भी, प्राप्त होते हुए भी उसका सुख का अनुभव नहीं कर सकते।

चौथा है मोक्ष, मोक्ष को आज की भाषा में कहें तो मन की शान्ति। और मन की शान्ति जो किसी के ऊपर आश्रित न हो, जो स्वयं पर आश्रित हो, हम भगवान का ध्यान करने बैठ गये और मन आराम महसूस कर रहा है, आनंद का अनुभव कर रहा है, शांति का अनुभव कर रहा है। भगवान का जप करने बैठ गये हैं, मन शांत अनुभव कर रहा है, या उतना अंतरंग नहीं है, तो भगवान को कोई पाठ कर रहे हैं, भगवान के विग्रह की सेवा कर रहे हैं, या किसी वाद्ययंत्र पर भगवान का भजन गा रहे हैं, माने जिसमें हमको अपनी शांति के लिए किसी बाहरी वस्तु, व्यक्ति की आवश्यकता न पड़े। उस शांति का अनुभव जो है, हमें मोक्ष पुरुषार्थ की ओर बढ़ाता है। जो स्वयं पर आश्रित हो, हमको अपनी सुख-शांति के लिए बाहर की वस्तु या व्यक्ति की जरूरत न पड़े, अपेक्षा न रहे, तो उसको मोक्ष पुरुषार्थ बोलते हैं।

कुल मिलाकर के आज की भाषा में, आज की जनरेशन के लिए अपने कर्तव्य का पालन करना, ड्यूटी का ईमानदारी से पालन करना, अर्थात् माता-पिता की सेवा, बच्चों का, पत्नी का ध्यान रखना। जितना आवश्यक हो, उससे थोड़ा ज्यादा कमाई के लिए प्रयास करना, 10 से 12 घण्टे प्रतिदिन और प्रतिदिन शरीर के लिए 1 घण्टा कम से कम देना है, और भगवान के लिए कम से कम 1 से 2 घण्टा प्रतिदिन देना है। जिससे चारों पुरुषार्थों का बेलेन्स रहेगा और वृद्धावस्था में जब शरीर काम करने लायक नहीं होता, अगर हम प्रारंभ से भगवान के लिए समय देंगे, तो वृद्धावस्था में उसको बढ़ाया जा सकता है। बच्चे हमारे पास बैठें इसकी आवश्यकता नहीं होगी, कोई हमारी बात सुने, इसकी हमें आवश्यकता नहीं होगी। अगर आपकी साधना बढ़ गई, भजन बढ़ गया, आनंद आने लग गया। आपको बुलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। लोग बिना बुलाये

आपके पास आयेंगे। आपका अनुभव जानना चाहेंगे। आपकी शांति का रहस्य जानना चाहेंगे। तो इसीलिए मेरा ऐसा मानना है कि जो सबसे कीमती वस्तु है, मनुष्य के जीवन के लिए, वो है अपनी आंतरिक शांति, और उस आंतरिक शांति का अनुभव बिना ईश्वर से जुड़े, बिना ईश्वरीय सत्ता का अनुभव किये, बिना ठाकुर का भजन किये संभव नहीं है। वो कितना भी अमीर व्यक्ति हो, कितनी भी बड़ी पोस्ट पर हो, मैं ऐसे बहुत लोगों को जानता हूँ। हर क्षेत्र के लोगों को जानता हूँ, जो बड़े–बड़े पोस्टों पर हैं, या जो बड़े–बड़े बिजनेसमेन हैं, अगर वो इसके बाद भगवान से जुड़े हैं तो सुखी हैं, और अगर भगवान से नहीं जुड़े हैं तो बहुत पैसा होनें के बाद भी, बहुत पावर होने के बाद भी, उनके जीवन में शांति नहीं है, अशांत रहते हैं, परेशान रहते हैं, शांति की खोज में भटकते रहते हैं। इसलिए हमारे शास्त्रों के अनुसार और संतों के अनुभव के अनुसार चारों पुरुषार्थों का बैलेन्स जीवन में रहे, तो जीवन सुखी रहेगा। इस लोक में भी और इस लोक से जाने के बाद भी।

।। जय श्री राम, जय श्री राम, जय श्री राम ।।

परम श्रद्धेय गुरुवर स्वामी गिरीशानन्द सरस्वती जी महाराज
जन्म दिवस 02 जुलाई पर बधाई गीत

जननी जन्यो सुभूमि अरतरा, ब्राह्मण कुल के उजियारे। हे गुरुवर, लो जन्म बधाई, देता शिष्य, सन्त सारे।।
मातु नर्मदा का पावन तट, तपस्थल शुचि ललित ललाम। रामेश्वर-शिवशंकर बिराज, परम सिद्ध साकेत धाम।।
अर्चन वन्दन शिव आराधन, घोष गूँजता, सीताराम। तपोभूमि, पावन सद्गुरु की, योग साधना हों निष्काम।।
गौरीघाट सुरम्य मनोहर, संध्या त्रिविध पवन धारे। हे गुरुवर, लो जन्म बधाई, देता शिष्य सन्त सारे।।

संयोजक बाबा कल्याणदास जी, संत समागम करवाते। अलंकरण प्रतिभामण्डल के, दिव्य महोत्सव रचवाते।।
विगत बीस वर्षों से होता, गुरु स्मृति उत्सव मेला। कथा श्रवण, आशीष वचन से, गदगद तृप्त होंय चेला।।
क्लिष्ट वृत्तियाँ, व्यसन विषय भी, संकल्पित-मन परिहारे। हे गुरुवर, लो जन्म बधाई, देता शिष्य सन्त सारे।।

आगंतुक का सद्गुरु स्वामी, सादर स्वागत करते हैं। मुक्तकंठ से मुक्तानंद जी, गीता प्रवचन करते हैं।।
जगतगुरु शंकराचार्य का, दर्शन पूजन होता है। अमृत वाणी की वर्षा से, तम अन्तस का खोता है।।
धर्म-सनातन, कर्म-आचरण, मूल्य मन्त्र मुख उच्चारें। हे गुरुवर, लो जन्म बधाई, देता शिष्य, सन्त सारे।।

भक्त करें श्रद्धा से हिल-मिल, मातु नर्मदा परिक्रमा। हर्षित हो उत्साहित करते, पंचकोशी की परिक्रमा।।
सद्गुरु की है कृपा सभी पर, पुण्य लाभ मिल जाता है। ज्ञानयज्ञ की दिव्य ज्योति से, ज्योतिर्मय उर होता है।।
दृष्टा साक्षी ज्ञानी ध्यानी, ऋतम्भरा बुद्धि निहारे। हे गुरुवर, लो जन्म बधाई, देता शिष्य, सन्त सारे।।

रचनाकार- कैलाश प्रसाद सोनी,
निवासी- सुमेरपुर, जिला-हमीरपुर (उ.प्र.)

गुरु की खोज

('योग विद्या' से साभार)

गुरु की खोज प्रारम्भ करने के पूर्व आपको अच्छी तरह यह समझ लेना चाहिए कि आप किन उद्देश्यों से इस हेतु अभिप्रेरित हैं। आप उनसे अपनी किन आवश्यकताओं की पूर्ति की अपेक्षा रखते हैं, क्या आप अन्तरात्मा की जागृति की भावना से प्रेरित हैं ? यह बात महत्वपूर्ण है कि आप किस प्रयोजन से गुरु की खोज करना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में पर्याप्त आत्मचिन्तन होना चाहिये। आप यह बात याद रखें कि जैसी आपकी आवश्यकता होगी, वैसे ही गुरु आपको मिलेंगे। यदि आपकी गुरु की आवश्यकता सच्ची होगी तो आपकी खोज के परिणामस्वरूप सही व्यक्ति अवश्य मिल जाएँगे। उदाहरण के लिये, आप आध्यात्मिक जीवन के उच्चतम लक्ष्य के अनुभव की इच्छा कर सकते हैं तथा ऐसा सोच सकते हैं। किन्तु वास्तव में आध्यात्मिक विकास की दृष्टि से आप निम्नतम स्तर पर स्थित हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में आप उच्चतम स्तर से ही यात्रा कैसे प्रारम्भ कर सकते हैं ? आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिये ऐसी घटना एक सामान्य बात है। कभी-कभी वे अति उत्साहित हो जाते हैं तथा गुरु खोजने हेतु शीघ्रता से ऋषिकेश या अन्य स्थानों की ओर प्रयाण का निर्णय ले लेते हैं। परिणामस्वरूप अनेक दुर्घटना को भोगकर तथा बुरी तरह निराश होकर वापस लौटते हैं।

अपनी आध्यात्मिक विकास यात्रा में गलतियों, दुर्घटनाओं एवं पश्चात्तापों से बचने के लिये आपको धीरे-धीरे क्रमबद्ध रूप से अपनी दिशा तथा आवश्यकताओं का निर्धारण करना होगा। संसार के प्रति हम एक नि:स्पृह, तटस्थ भाव का अनुभव करते हैं। हमें प्रत्येक वस्तु में क्षणभंगुरता का अनुभव होने लगता है। इसलिए हम उन सभी वस्तुओं के प्रति उदासीन रहने लगते हैं जिन के लिये कभी हम में तीव्र ललक हुआ करती थी। ऐसे विचारों के प्रभाव में आकर हम गुरु खोज सकते हैं और सन्यास भी ले सकते हैं। किन्तु अपने क्षणिक मानसिक सदमे से उबरते ही हम पाते हैं कि हमारी इच्छाएँ, महत्व एवं वासनाएँ त्वरित गति से वापस आ रही हैं। तब हम अनुभव करते हैं कि यदि हम अपनी आवश्यकताओं का ठीक से विश्लेषण करते तो गुरु की खोज उपर्युक्त लक्ष्यों से निर्धारित होती, अन्य से नहीं। भौतिक पदार्थों की क्षणभंगुरता से सम्बन्धित विचार वैसे साधकों के मन में भी उठते हैं जो वास्तव में अपनी इच्छाओं का त्याग कर गुरु के निकट रहना चाहते हैं। एक बार निर्णय ले लेने के बाद कठिनाइयों का सामना होने पर पीछे मुड़ने या भटकने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

प्रारम्भ में ही आप अच्छी तरह समझ लें कि गुरु में आप क्या खोज रहे हैं। इस बात को समझने केलिए पूर्ण सावधानी से काम लेना आवश्यक है। गुरु के निर्धारण में आपके प्रयोजन तथा सजगता के स्तर की भूमि का बहुत महत्वपूर्ण होती है। सत्संग और साधना गुरु की खोज करने वाले साधक के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि वह स्वयं को शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक रूप से तैयार करे। इस हेतु सर्वोत्तम उपाय यह है कि वह आध्यात्मिक विषयों पर होने वाले सत्संगों, व्याख्यानों एवं वार्ता लापों में अधिकाधकि भाग ले। वह ऐसे ज्ञानी पुरुषों की खोज में अवश्य रहे जो शास्त्रों द्वारा उद्घटित जीवन के रहस्यों तथा मौलिक सत्यों की व्याख्या कर सकें और उसे आत्मनिरीक्षण हेतु प्रेरित कर सकें। ज्ञानी जनों से सत्संग के इस अभ्यास को आप अपने दैनिक जीवन का एक अंग बना सकते हैं। जब भी अवसर मिले, आप ऐसे लोगों के सान्निध्य के लाभ से न चूकें।

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि जब भी हम सकारात्मकता के सम्पर्क में आते हैं तो हम उसी दिशा में अपना विकास करने हेतु प्रेरित होते हैं। सत्संग में शामिल होने के साथ–साथ आपको कुछ व्यक्तिगत साधना या यौगिक अभ्यास नियमित रूप से करना चाहिए। कुछ समय के बाद आप पायेंगे कि आपकी समझ अधिक स्पष्ट एवं आपके निर्णय अधिक सटीक हैं। अपनी सीमाओं, सामर्थ्य एवं कमजोरियों के बारे में आपकी जानकारी बेहतर होगी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह होगी कि आपके सामने आपका लक्ष्य या उद्देश्य स्पष्ट होने लगेगा। इसमें कुछ समय लग सकता है। एक बात पर जोर देने की आवश्यकता है। सीमित सजगता के साथ गुरु का चयन नहीं किया जाना चाहिये। अपना वास्तविक गुरु पाने के पूर्व आपको ऐसे अनेक अनुभवों से गुजरना पड़ सकता है। आपको ऐसे अनुभवों के सकारात्मक प्रभावों को ग्रहण करना चाहिए। लेकिन आप वास्तविक रूप से तब तक प्रतिबद्ध न हों जब तक कि आप पूर्णत: आश्वस्त न हो जाएँ । व्यक्ति इस सम्बन्ध में तभी नि:संशय और तैयार हो सकता है जब उसकी समझ शुद्ध और बहुत हद तक स्पष्ट हो जाए। आप सत्संग और साधना द्वारा अपने को तैयार कीजिए। दक्ष योग शिक्षक आपको उपयुक्त यौगिक क्रियाओं के बारे में सलाह दे सकते हैं। इसी प्रकार ज्ञानी लोगों के सत्संग में भाग लेने के भी पर्याप्त अवसर मिलते हैं। ज्यों ही आपकी सजगता बढ़ेगी और समझदारी गहरी होगी, आपको अपना मार्ग और गुरु अनायास ही मिल जाएगा।

गुरुओं की श्रेणियाँ जिस प्रकार एक शिष्य के लिये विकास के अनेक स्तर होते हैं उसी प्रकार भिन्न–भिन्न गुरु भी विकास के अलग–अलग स्तरों पर होते हैं। ज्ञानी गुरु धर्मशास्त्रों में निष्णात होते हैं। ब्रह्मनिष्ठ गुरु सदैव ब्रह्म या परम सत्य में लीन रहते हैं। ऐसे गुरु दुर्लभ होते हैं। यदि

आपको ऐसे गुरु मिल जाएँ और आप उनके गुणों को पहचानने में सफल हो जाएँ तो आपको समझना चाहिये कि आप बहुत भाग्यवान् हैं। हो सकता है कि आप ऐसे महापुरुषों से कई बार मिल चुके हों, पर अपनी सन्देह और दम्भभरी बुद्धि के कारण आप उन्हें न पहचान सके हों। वे अपनी पीठ पर कोई विज्ञापन लगाकर नहीं चलते कि मैं ब्रह्मनिष्ठ हूँ, मेरा अनुसरण करो। सच्चे ब्रह्मनिष्ठ गुरु सभी प्रकार के आडम्बरों से बचते हुए सरलतम जीवन बिताते हैं। यहाँ एक बात को स्पष्ट करना आवश्यक है। गुरु मूलत: दो प्रकार के होते हैं, एक को परम तत्व का ज्ञान होता है और दूसरे को उसका ज्ञान और अनुभूति, दोनों होते हैं। आपको कैसे गुरु की आवश्यकता है इसका निर्णय आपको स्वयं करना है। यदि आपको सिर्फ ज्ञान चाहिये तो आप एक ज्ञानी गुरु की खोज करें। किन्तु यदि आप अनुभूति प्राप्त करना चाह ते हैं तो आपको एक ब्रम्हनिष्ठ या तान्त्रिक गुरु की शरण में जाना होगा।

प्राय: अपने पूर्व जीवन में शिष्य एक गुरु के साथ रह चुका होता है, किन्तु वर्तमान जीवन में उसे गुरु से किसी सम्पर्क के बिना कुछ अनुभवों से गुजरना होता है। इन अनुभवों से गुजरने के बाद गुरु के प्रति उसकी उत्कण्ठा बढ़ने लगती है। यह स्थिति कुछ हद तक भूख से रोते हुए बच्चे के समान है। माँ उसका रोना सुनती है, किन्तु वह जानती है कि उसे दूध पिलाने का यह उचित समय नहीं है। इसी प्रकार आपके जीवन में गुरु के अभ्युदय का भी एक सही समय होता है। वह मुहूर्त आते ही आपको गुरु मिल जायेंगे। ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं जब गुरु शिष्य की स्वप्नावस्था या ध्यानावस्था में प्रकट होते हैं। तब शिष्य उस व्यक्ति की खोज करता है जि से उसने इस अवस्था में देखा है। महर्षि अरविन्द की प्रमुख शिष्या 'माँ' को गुरु का दर्शन स्वप्न में ही हुआ। उन्होंने देखा कि महर्षि उन्हें अपनी ओर आने के लिये इशारा कर रहे हैं। बाद में वे अरविन्द आन्दोलन का बहुत महत्वपूर्ण अंग बन गयीं। कभी-कभी गुरु को भी किसी विशेष शिष्य को खोजने या प्राप्त करने का आदेश मिलता है, किन्तु ऐसा मुख्यत: विकसित चेतना वाले शिष्यों के सम्बन्ध में ही होता है जिन्हें किसी महान लक्ष्य की पूर्ति करनी होती है। रामकृष्ण परमहंस एवं स्वामी विवेकानन्द की कहानी तो हम सभी जानते ही हैं। रामकृष्ण अपने शिष्य की खोज में थे। जब वे कलकत्ता के एक कुलीन युवक, नरेन्द्र से मिले तो तत्क्षण समझ गए कि वे ही उनके महान लक्ष्यों को पूरा करेंगे। नरेन्द्र ही आगे चलकर स्वामी विवेकानन्द हुए। उन दिनों नरेन्द्र पूर्णत: बुद्धिवादी थे। वे रामकृष्ण की अनेक बातों तथा क्रिया-कलापों से सहमत नहीं होते थे। उनके विचार तथा प्रतिक्रियाएँ उनकी बुद्धिवादिता से प्रभावित थीं। इसके बावजूद उनका हृदय सम्मोहित होकर रामकृष्ण की तरफ खिंचा चला जाता था। युवक नरेन्द्र इस रहस्य को नहीं समझ पाते थे, इसलिए उन्हें अत्यधिक मानसिक द्वन्द्व से गुजरना पड़ता था। धीरे-धीरे परिस्थितियाँ ऐसा रूप लेती गयीं

कि अन्त में नरेन्द्र गुरु के आगे पूरी तरह समर्पित हो गए। आगे की कहानी तो एक इतिहास बन गई।

हमें स्वीकार करना होगा कि ऐसी महत्वपूर्ण घटनाओं का निर्धारण उच्च शक्तियों द्वारा होता है। उचित समय आने पर ये घटनाएँ अपने आप एक निश्चित स्वरूप लेने लगती हैं। आप स्वत: अपने गुरु के पास पहुँच जाते हैं। आप जैसे ही उन्हें देखते हैं, आपका हृदय, आपकी आत्मा उनसे जा मिलती है। उस समय आपके सारे संदेह निर्मूल हो जाते हैं। दो हृदयों के मिल जाने के उपरान्त सारे प्रश्न समाप्त हो जाते हैं। जब हम बुद्धि के क्षेत्र में रहते हैं तभी प्रश्नों, सन्देहों एवं विभिन्न प्रकार की कुण्ठाओं से परेशान होते हैं। अपने अन्दर झाँकिए, अपनी साधना को तीव्र कीजिए। लगनशील साधक बनिए। ऐसा होने पर संसार की कोई भी शक्ति आपको आपके गुरु से अलग नहीं रख सकेगी।

अन्त में हम कह सकते हैं कि गुरु प्राप्त करने की कोई निश्चित पद्धति नहीं होती। यह कोई ऐसी चीज नहीं जि से हम बाजार में खरीद सकें। गुरु की कोई सटीक परिभाषा नहीं दी जा सकती। वे हमारे सीमित, परम्परागत शब्दों से परे होते हैं। हमें तो उनकी आत्मा से संचार स्थापित करना है। ऐसा संचार शब्दों, इन्द्रियों या बुद्धि पर आधारित नहीं होता। इसलिए हम मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक स्तर पर स्वयं को तैयार करें और कुछ समय बाद, जब गुरु मिलेंगे, हम उन्हें जरूर पहचान लेंगे ।

।। जय गुरुदेव भगवान की ।।

जो तुम्हारी आलोचना करे, उसको तुम अपने कमरे में रखो, ताकि वह बिना पानी और साबुन के तुम्हारा कमरा साफ कर दे, पर ऐसा होता नहीं है। आदमी हमेशा अपनी बुराई करने वाले को उपेक्षित करता है और अपनी तारीफ करने वाले को अपने कमरे में रखता है, दुनिया में सब जगह ऐसा ही होता है। **–श्री स्वामी सत्यानंद सरस्वती**

भगवान पर तुम्हारा विश्वास इतना गहरा हो कि तुम अपने आपको पूरी तरह से उनमें इस प्रकार विलीन कर सको और तुम्हारा दु:ख भी सुख में बदल जाये। **–श्री स्वामी सत्यानंद सरस्वती**

जब हम गुरु के प्रति समर्पित रहते हुए, गुरु की शिक्षाओं को आत्मसात करते हुए उस मार्ग पर चलते हैं, तब गुरु हमें अपने जीवन में त्याग और समर्पण को अपनाने तथा विश्वास को धारण करने में सहायता देते हैं। **–श्री स्वामी निरंजनानंद सरस्वती**

जीवन में समय का सदुपयोग

(पूज्य गुरुदेव की वाणी से)

।। त्वदीय पाद पंकजम्, नमामि देवी नर्मदे ।।

आज हम लोग चर्चा कर रहे हैं कि, हमारे जीवन में 24 घंटे का कैसे सदुपयोग करें ? हमारे परमपूज्य गुरुदेव पूज्य स्वामी श्री अखंडानंद जी महाराज कहते थे, अगर जीवन का कोई लक्ष्य नहीं है, तो सबसे पहले जीवन का लक्ष्य निश्चित करो और लक्ष्य निश्चित करने के बाद उसका टाइम टेबल बना करके उसकी ओर अग्रसर हो। तभी जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। भगवान द्वारिकाधीश भगवान कृष्ण गृहस्थ आश्रम में जाने के बाद उन्होंने जैसा अपना 24 घंटे को सदुपयोग किया वो सभी के लिए बहुत ही उपयोगी और चमत्कारी है। भगवान कृष्ण रात्रि में 6 घंटे की नींद लेते थे, वैसे वे भगवान थे। लोक व्यवहार के लिए उन्होंने ये सारी लीलाएँ की।

ब्रह्म मुहूर्त में 4 बजे उठ करके वो आत्मचिंतन करते थे, उसके बाद स्नान इत्यादि करके बाल भोग करके, अपने माता-पिता को नित्य प्रति प्रणाम करते थे। उनका जो जीवन का व्यवस्थित था टाइम टेबल, 6 घंटा उनका सोने के लिए था। आज के समय में ज्यादा से ज्यादा अधिकतम 7 घंटा कर सकते हैं। 3 घंटा भोजन प्रसाद के लिए था। प्रात:काल बालभोग, मध्यान में राजभोग, रात्रि में शयन भोग। 7 और 3, 10 घंटा हुआ। 10 घंटा भगवान कृष्ण राजसभा में बैठते थे। वह अगर प्रजा की कोई समस्या होती थी तो उसका श्रवण कर निदान करते थे और उसके बाद धर्मशास्त्रों का श्रवण संगीत का श्रवण, ये सब जो एक राजा के स्वभाव के अनुरूप थे, वो सारे कार्य करते थे। अर्थात् 10 घंटा हम लोगों को ऑफिस में देना चाहिए कार्य के लिए। सर्विस करते हैं, तो भी और बिज़नेस करते हैं, तो भी जिन लोगों का मानना है कि 10 घंटे से ज्यादा देंगे तो अधिक कमा सकेंगे, ये उन लोगों का भ्रम है।

पूज्य रोटीराम बाबा कहते थे, आध्यात्मिक उन्नति में हमारी मेहनत एक नम्बर पर होगी और भाग्य दूसरे नम्बर पर होगा। और भौतिक उन्नति में, हमारा भाग्य एक नम्बर पर होगा, मेहनत दूसरे नम्बर पर होगी। इसलिए प्रकट दृष्टातो में भी हम लोग देखते हैं, एक ही व्यक्ति होता है, एक ही बिजनेस होता है, कभी वो 2 घंटे में बहुत कमाई कर लेता है। कभी वो 10 घंटे काम करने के बाद भी घाटे में चला जाता है। नुकसान हो जाता है, तो अगर मेहनत से फायदा होता तो हर समय मेहनत से फायदा होना चाहिए। श्रुति, युक्ति, अनुभूति तीनों के आधार पर निश्चय होता है, मेहनत करोगे उतनी सफलता मिलेगी और भौतिक में आप अपना कर्तव्य-कर्म करो, आपके भाग्य में जितना

लिखा समय से आ जायेगा और जो नहीं लिखा वो मेहनत करने के बाद भी नहीं आएगा। तो 10 घंटा ऑफिस के लिए या व्यापार के लिए 2 घंटा परिवार के, लिए अगर माता–पिता हैं तो उनके पास बैठना, उनका हालचाल पूछना, सुख–दुख पूछना। पत्नी–बच्चे हैं तो उनके साथ 1 घंटा रोज कम से कम व्यतीत करना जिससे परिवार में शांति बनी रहे।

आजकल के समय में जो बड़े–बड़े महानगरों में विवाद हो रहे हैं। संपत्ति को लेकर तो है ही, लेकिन संपत्ति से ज्यादा विवाद पति–पत्नी में यह है कि एक–दूसरे के लिए टाइम नहीं, समय नहीं इस बात का ज्यादा विवाद है। हमारे शास्त्र कहते हैं, रोज माता–पिता और पत्नी, बच्चों को रोज समय देना चाहिए। उसके बाद भी दो घंटा आपके हाथ में बचा, एक घंटा प्रतिदिन आप अपने शरीर के लिए दो आसन, प्रायाणाम करो, दौड़ लगाओ, जिम जाओ, या जो भी आपको अनुकूल पड़े, शरीर को देना चाहिए, और 25 से 50 की उम्र वालों के लिए एक घंटा कम से कम ईश्वर के लिए देना चाहिए। 50 से ऊपर वालों के लिए तो दो घंटा देना चाहिए। उसमें कुछ जो आपके गुरु ने बताया हो ध्यान है, जप है, पूजा है, पाठ है, जिसके गुरु ने जो बताया हो वही करना ही साधना है, गुरु के आदेश के अनुसार। इस प्रकार से आप अपने 24 घंटे को व्यतीत करेंगे इस लोक में भी सुखी रहेंगे। आनंदित रहेंगे। पारिवारिक दृष्टि से, आर्थिक दृष्टि से, शारीरिक दृष्टि से, और इस लोक से जाने के बाद ईश्वर की अनुभूति में पहुंच जाएंगे। आध्यात्मिक उन्नति में पहुँच जाएंगे, क्योंकि प्रतिदिन युवावस्था में जब 1 घंटा आप ईश्वर को देंगे, तो वृद्धावस्था में उसका समय बढ़ा सकेंगे और वृद्धावस्था में आपको किसी दूसरा पास में बैठे इसकी आवश्यकता नहीं होगी। ईश्वर आप पर कृपा करेंगे स्वास्थ रहेंगे और अंत में भगवान का अनुभव करेंगे।

।। जय श्री राम ।। जय श्री राम ।। जय श्री राम ।।

- सेवा चित्त सरल निर्मल एवं उज्जवल बनाती है उसमें अनुरोध ही अनुरोध है किसी का विरोध या अवरोध नहीं है।
- आनंद बांटो आनंद बढ़ेगा जैसे कुएं में से जल निकालते हो तो और और निकलता जाता है वैसे ही जितना आनंद तुम दोगे उतना आनंद तुम्हें मिलेगा।
- जो व्यक्ति प्रत्येक स्थान समय वस्तु परिस्थिति में सुख निर्माण की विद्या कला को जानता है वही सबसे बड़ा जानकार और सच्चा कलाकार है। सुख बनाओ और सुख बांटो।
- जिसके जीवन में आज्ञा पालन और प्रतिज्ञा पालन नहीं है वह अपनी बुद्धि की अवज्ञा करेगा और किसी भी चीज का निश्चय नहीं कर सकेगा।

– पूज्य स्वामी अखण्डानंद सरस्वती जी महाराज

गुरुदेव की विभिन्न मुद्राएं

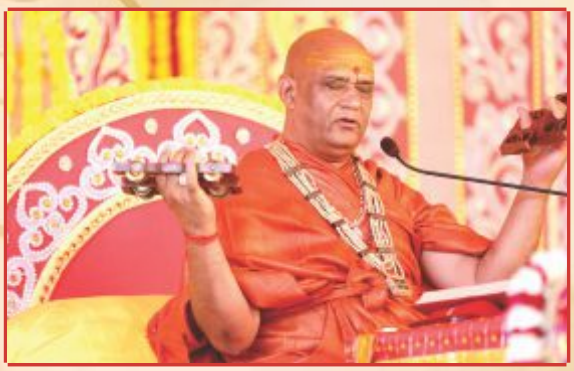
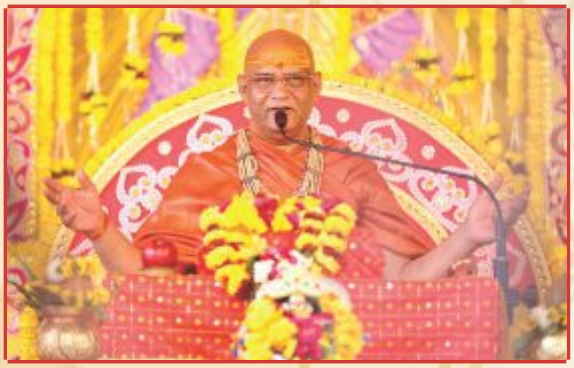

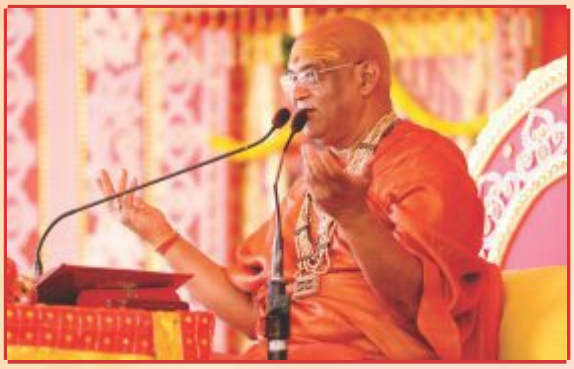

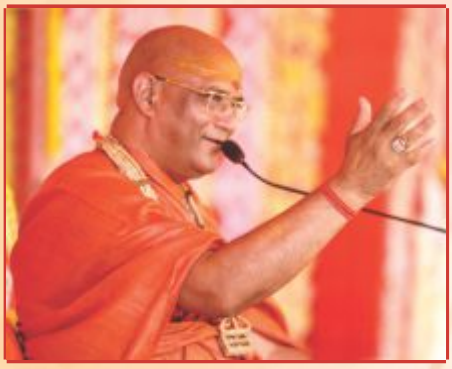

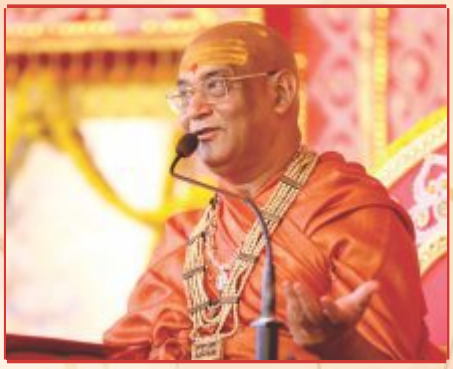

विविधा

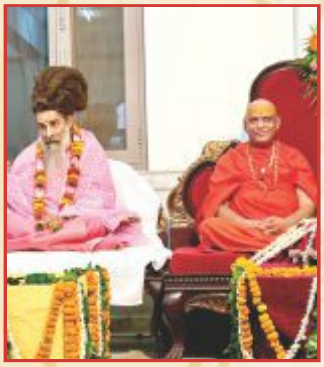

स्वामी जी समाचार पत्रों में

साध्वी ऋतम्भरा ने किया अष्ट दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ

स्वामी गिरीशानंद सरस्वती की प्रेरणा से परिक्रमावासियों को मिली सौगात

महारास मानवीय नहीं ईश्वरीय लीला : स्वामी गिरीशानंद जी

मां नर्मदा का किया पूजन, रोपे पौधे

शिष्यों ने की पुष्प वर्षा

देश की संस्कृति ही राष्ट्र निर्माण का द्योतक: साध्वी ऋतम्भरा

दीप प्रज्वलित कर किया श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ

वैशाख में 11 दिन सूर्यदेव की प्रथम किरण करती है रामेश्वरम महादेव का अभिषेक

नर्मदा तट गौरीघाट में नैसर्गिक तिलकोत्सव का दर्शन करने उमड़ी जनमेदिनी, पांच मई तक प्रतिदिन सुबह छह से सवा छह बजे तक होगा विशेष पूजन

21 वर्ष पहले हुआ था साकेत धाम आश्रम का निर्माण

स्वामी जी समाचार पत्रों में

अहंकार का समर्पण करने से ही परमात्मा मिलता है

जबलपुर। जो अविनाशी है वह शिव है, मान-अभिमान, बुद्धि चित्त का अहंकार का समर्पण करने से ही परमात्मा मिलता है। कर्म और विवेक परमात्मा को समर्पित करना ही जीवन की श्रेष्ठता है। जीवन की कष्ट और कठिनाइयों से जूझ कर शिवत्व सफलताओं की ऊँचाइयों को प्राप्त करता है। उपरोक्त उद्गार गौरीघाट स्थित साकेतधाम में श्री रामेश्वरम महादेव के 21 वें पाटोत्सव के तृतीय दिवस में पंडित उमाशंकर शर्मा व्यास

भी आवश्यक है, इस से ज्ञात होता है कि हमारी बुद्धि कार्यरत है। भूख ना

सिलाई मशीन का वितरण निर्धन महिलाओं को किया गया जिससे वे

जाएगा।संत विद्वानों का स्वागत अभिनंदन रविन झुनझुनवाला,

स्वामी गिरीशानंद की भागवत सुनने सपत्नीक पहुंचे उपराष्ट्रपति

सोसायटी 02 पत्रिका

'प्रकृति और मानव का गहरा सम्बंध है नर्मदा परिक्रमा'

श्रीधाम वृंदावन के राधागोविंद मंदिर में मनाया गया नंदोत्सव

दुबई से आए भक्त, स्वामी गिरीशानंद ने की अध्यक्षता

नईदुनिया प्रतिनिधि, जबलपुर : नर्मदा तट साकेत धाम के अधिष्ठता स्वामी गिरीशानंद महाराज ने इस वर्ष श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में श्रीधाम वृंदावन स्थित राधागोविंद मंदिर में हुए नंदोत्सव के आयोजन की अध्यक्षता की। दुबई निवासी प्रीति पुनीत भाटिया परिवार ने इस मंदिर का निर्माण कराया है। वे प्रतिवर्ष

आयोजन के दौरान उपस्थित स्वामी गिरीशानंद महाराज सहित अन्य। ● सौजन्य आयोजक

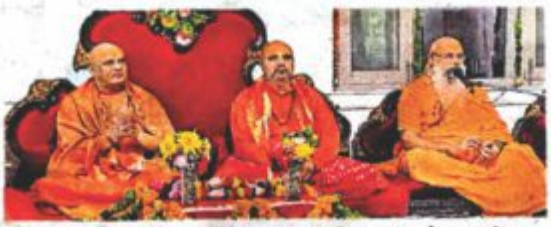

श्रद्धा प्रगट करते हैं। स्वामी गिरीशानंद ने बताया कि उनके अलावा वेदांत माधवानंद की गरिमामय उपस्थिति रही। न्यास अध्यक्ष राजीव द्विवेदी

आयोजन का आनंद लिया। इस दौरान स्वामी गिरीशानंद सहित अन्य ने श्रीकृष्ण के जीवन-चरित से मिलने वाली शिक्षा को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि किस तरह श्रीकृष्ण ने अत्याचार के विरुद्ध शंखनाद किया। आवश्यकता पड़ने पर महाभारत करा दी। जीवन का आनंद उनके आचरण में झलका। साथ ही माता-पिता व गुरुजनों के सम्मान का महान संदेश भी उनका वैशिष्ट्य है। स्वामी गिरीशानंद महाराज सहित अन्य

आनंद चाहते हो तो कीर्तन करो: स्वामी गिरीशानंद

कोलकाता, 10 जनवरी (नि)। जीवन में भक्ति आ जाए तो किसी के सामने की नहीं।यह भक्ति का प्रभाव है कि त्रिलोकी को जीतने वाला हिरण्यकश्यपु को जब पता चला कि उसकी बहन होलिका जो प्रह्लाद को जलाने चली थी ,वह चिताग्नि में जल गई ,प्रह्लाद बच गया तो वह भय के मारे कांपने लगा। यह भगवान के नाम लेने के कारण प्रह्लाद बच गया।इसी बात को भक्त प्रह्लाद गुरुकुल में दैत्य बालकों से कहते हैं,जो जीवन मिला है तो पहला कर्तव्य है ईश्वर का भजन करो।इसलिए दुनिया का चर्चा छोड़ो और भगवान का भजन करो। दैत्य बालकों! भगवान को खुश करने के लिए बहुत ज्यादा जरूरत नहीं।जितना प्रयास दुनिया के लिए करते हो उसका 10 प्रतिशत भगवान के लिए करो।साधना से मन की शुद्धि होती है।सत्संग से बुद्धि शुद्धि होती है।आनंद चाहते हो तो सद्गुरु की सेवा

करो,संतों के साथ रहो और ईश्वर की आराधना करो,कीर्तन करो।दुनिया को खुश करना कठिन है,ठाकुर को खुश करना सरल है।ये बातें संगीत कला मंदिर व संगीत कला मंदिर ट्रस्ट के तत्वावधान में श्रीमद्भागवत कथा के अंतर्गत भक्त प्रह्लाद चरित्र पर प्रवचन करते हुए परम पूज्य परमहंस स्वामी गिरिशानंद महाराज ने संगीत कला मंदिर सभागार में कही। इस मौके पर अरविन्द नेवर देवेन्द्र मंत्री, मंजू नेवर, विनोद माहेश्वरी, शीला झुनझुनवाला, सजन बंसल, मुरारीलाल दीवान, अशोक चूड़ीवाल बीएसएफ के कमांडेंट मनोज राय, संगीता राय, वीणा चूड़ीवाल, वर्षा अग्रवाल, प्रभात पंसारी, डा.एस बी नागौरी, बबीता दीवान, राजू चौधरी, संदीप अग्रवाल, रामकथावाचक पुरुषोत्तम तिवारी, किशन लाल कंगटा,सुभाष मुरारका सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

श्रीराधा गिरिधर गोपाल मन्दिर में श्रीमद्भागवत कथा में पहुचीं सांसद हेमा मालिनी

श्री रामेश्वरम् महादेव

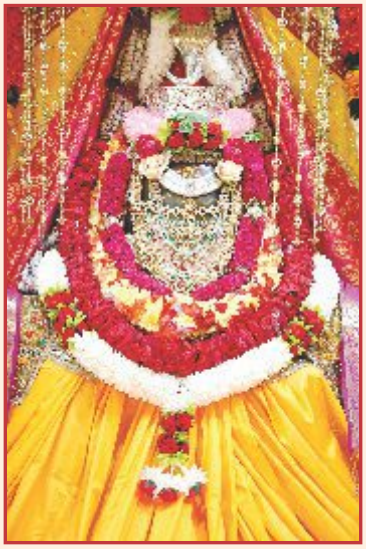

साकेत धाम

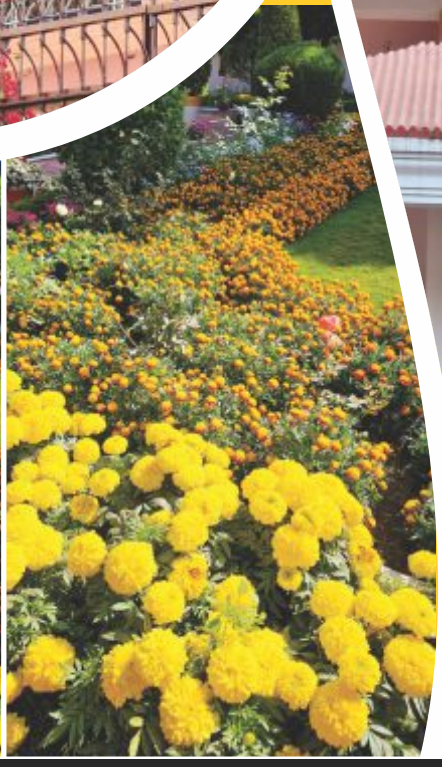

साकेत धाम
कोसलेन्द्रोऽवतान्नः

श्री रामेश्वरम् महादेव